



जम्मू और कश्मीर में प्रगति का नया दौर



लगभग ₹44,000 करोड़
की रेल परियोजनाओं का उपहार

चिनाब ब्रिज

(दुनिया का सबसे ऊँचा रेल आर्च ब्रिज)

- 359 मीटर ऊँचा, 1,315 मीटर लम्बा एवं 467 मीटर का आर्च स्पैन
- जम्मू और कश्मीर के रियासी जिले के कौरी एवं बक्कल एरिया को जोड़ने वाला ब्रिज

अंजी ब्रिज

(भारत का पहला केबल स्टेड रेल ब्रिज)

- 725 मीटर लंबा, 290 मीटर का मुख्य स्पैन
- जम्मू और कश्मीर के कटड़ा एवं रियासी जिलों को जोड़ने वाला ब्रिज
- 193 मीटर ऊँचे एकमात्र विशाल पायलन से जुड़ी 96 केबल्स

का उद्घाटन

उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक परियोजना

- जम्मू और कश्मीर को शेष भारत से जोड़ने वाली हर मौसम के अनुकूल उन्नत रेल कनेक्टिविटी
- कुल लम्बाई 272 किमी जिसमें टी-50 सुरंग (भारत की सबसे लंबी संचालित सुरंग) सहित 36 सुरंगें और 943 पुल शामिल हैं

का राष्ट्र को समर्पण

2 वंदे भारत ट्रेनों

श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा - श्रीनगर एवं
श्रीनगर - श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा

- श्रीनगर के लिए पहली सेमी-हाई-स्पीड ट्रेन
- पर्यटन और क्षेत्रीय संपर्क को बढ़ावा
- कटड़ा से श्रीनगर तक की यात्रा लगभग 3 घंटों में संभव

का शुभारंभ

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री
के द्वारा

गरिमामयी उपस्थिति

नितिन जयराम गडकरी
केंद्रीय सड़क, परिवहन
एवं राजमार्ग मंत्री

अश्विनी वैष्णव
केंद्रीय रेल, सूचना एवं
प्रसारण और इलेक्ट्रॉनिक्स
एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री

डॉ. जितेंद्र सिंह
केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा
पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
तथा प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मिक,
लोक शिकायत एवं पेंशन, परमाणु ऊर्जा विभाग
एवं अंतरिक्ष विभाग राज्य मंत्री

वी. सोमना
केंद्रीय रेल एवं
जल शक्ति राज्य मंत्री

रवनीत सिंह
केंद्रीय रेल एवं खाद्य
प्रसंस्करण उद्योग
राज्य मंत्री

मनोज सिन्हा
उपराज्यपाल,
केंद्र शासित प्रदेश
जम्मू और कश्मीर
एवं श्री माता वैष्णो देवी
श्राइन बोर्ड के अध्यक्ष

उमर अब्दुल्ला
मुख्यमंत्री,
केंद्र शासित प्रदेश
जम्मू और कश्मीर

सुरिंदर कुमार चौधरी
उपमुख्यमंत्री, केंद्र शासित प्रदेश
जम्मू और कश्मीर

जुगल किशोर
सांसद (लोकसभा) जम्मू

आगा सैयद रुहुल्लाह मेहदी
सांसद (लोकसभा) श्रीनगर

गुलाम अली
सांसद (राज्यसभा)



शुक्रवार, 6 जून, 2025



प्रातः 11:00 बजे



श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स कटड़ा (स्टेडियम)



भारतीय रेल

खबर एक नज़र

बिल्हौर में गंगा स्नान के दौरान तीन लोगों की डूबने से मौत

बिल्हौर कानपुर जनपद की बिल्हौर तहसील के कल्लू पुरवा गांव में गंगा स्नान करने गए तीन लोग डूब गए जिसमें दो युवक और एक बच्ची की दुखद मृत्यु हो गई। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार बिल्हौर तहसील के गुंगा तट निकटवर्ती ग्राम कल्लू पुरवा में सर्वेश के घर पर उनके बेटे के मुंडन संस्कार में शामिल होने के लिए रिश्तेदार एवं सगे संबंधी आए हुए थे जिसमें उसकी पत्नी का भाई बलराम उम्र लगभग 22 वर्ष निवासी औंगी थाना शिवली जनपद कानपुर देहात अपनी पत्नी और उसके भाई संदीप एवं पिता रामविलास के साथ अपने बहन बहनों के घर मुण्डन संस्कार में शामिल होने आया था। सर्वेश के अनुसार उसकी पत्नी की तबियत खराब होने के चलते वह दवा लेने के लिए गया था। उसकी अनुपस्थिति में रिश्तेदारों ने गंगा दशहरा का पर्व होने के चलते गंगा स्नान की इच्छा जाहिर की और उसकी पुत्री प्रियंका के साथ उसके मामा बलराम और उनका साला संदीप गंगा स्नान करने चले गए। सभी लोग नहा रहे थे तभी प्रियंका गहराई में चली गई और डूबने लगी। उसे डूबता हुआ देखकर बचाने के लिए पहले बलराम गहराई में गया और डूबने लगा और उन दोनों को डूबते हुए देखकर उन्हें बचाने के लिए संदीप भी आगे गहराई में चला गया और वह भी गहराई में डूब गया। इस दौरान आवाज सुनकर कुछ गोताखोर एवं थोड़ी दूर स्नान कर रहे गांव के अन्य लोग भी भाग कर मौके पर पहुंचे और उन सभी की तलाश शुरू कर दी। ग्रामीणों ने कुछ देर में ही तलाश करके बलराम और प्रियंका को बाहर निकाल लिया और कुछ देर बाद संदीप को भी बाहर निकाल लिया। सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची एंबुलेंस द्वारा उन्हें अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने जांच के उपरांत उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलते ही एसडीएम रश्मि लांबा एसपी अमरनाथ यादव थाना प्रभारी अशोक कुमार सरोज मौके पर पहुंचे। बाद में डीसीपी पश्चिम दिनेश त्रिपाठी ने बिल्हौर पहुंचकर घटना के संबद्ध में परिजनों से बात की। बिल्हौर पुलिस के अनुसार शर्वा को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और अग्रिम विधिक कार्यवाही की जा रही है।

मायके पहुंची युवती प्रेमी संग फरार परिजनों ने गांव निवासी युवक पर लगाया आरोप

भीतरगांव। साढ़ थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी युवती शादी के एक माह बाद ही ससुराल में प्रेमी के साथ रोहताथ पकड़े जाने पर मायके पहुंची और घर में रखे जेवरात तथा नगदी समेत गांव निवासी प्रेमी के साथ फरार हो गई देश शाम तक तलाश करने के बाद मामले की जानकारी भाई ने साढ़ पुलिस से गांव निवासी एक युवक पर आरोप लगाते हुए लिखित शिकायत कर कार्यवाही की मांग की। परिजनों ने साढ़ थाना पुलिस को लिखित शिकायती पत्र देते हुए बताया कि बीते माह युवती की शादी कानपुर के लक्ष्मीपुरवा निवासी रवि के साथ हिन्दू रीति रिवाज के साथ किया था शादी के एक माह बाद ही युवती घर पहुंची और मौका देखकर घर में रखे दस हजार रुपए और जेवरात लेकर प्रेमी के साथ फरार हो गई परिजन देर शाम तक खोजबीन करते रहे तभी उन्हें गांव निवासी युवक द्वारा उसे ले जाने की जानकारी मिलते ही युवती के परिजनों ने थाना पुलिस से लिखित शिकायत की बताया जाता है कि युवती की उम्र युवक से अधिक है सूत्रों की माने तो गांव निवासी प्रेमी बीते दिन युवती की ससुराल भाई बनकर पहुंचा और दो दिन तक वहां उसकी खूब आवभगत होती रही तीसरे दिन ससुराल पक्ष के लोगों ने भाई बने युवक और युवती को रो हाथ पकड़ लिया जिस पर उसकी खूब धुलाई हुई किसी तरह युवक ने भागकर जान बचाई बताया जाता है कि युवती को ससुराल पक्ष के लोगों ने रखने से इनकार कर दिया जिससे युवती मायके पहुंची और मौका देखकर घर में रखा दस हजार रुपए और जेवरात लेकर प्रेमी के साथ फरार हो गई साढ़ थाना प्रभारी निरीक्षक अन्वयंश कुमार सिंह ने बताया कि तहरीर मिली है युवक और युवती की तलाश की जा रही।

पल्लवी क्लासेज में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया

बिल्हौर आज विश्व पर्यावरण दिवस पर पल्लवी क्लासेज में पेड़ पौधों के महत्व के बारे में बच्चों को विस्तार पूर्वक बताया गया। इस बार पर्यावरण की थीम पर्यावरण है तो हम हैं और अगर पर्यावरण सुरक्षित नहीं होगा तो हम भी चैन की सांस नहीं ले पाएंगे। पर्यावरण के इसी महत्व से सभी को अवगत कराने के लिए हर साल 5 जून के दिन विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इस मौके पर पल्लवी क्लासेज के संचालक विशाल चतुर्वेदी मनोज चतुर्वेदी सारिका रमनी चतुर्वेदी रवि तरुण देवांश सजल अवंतिका लवी यादव शिखा सिद्धि मौजूद रही।

एसडीएम ने नंदना में छापा मारकर पकड़ा मिट्टी

का अवैध खनन करने वालों पर की एसडीएम ने घाटमपुर। मिट्टी का अवैध खनन करने वालों के खिलाफ एसडीएम अबिचल प्रताप सिंह की कार्यवाही का डंडा चला। बुधवार की रात एसडीएम ने तहसीलदार लक्ष्मी नारायण बाजपेई के साथ नंदना में छापा मारकर मौके से एक जेसीबी और चार ट्रैक्टर ट्रॉली को पकड़कर पुलिस को सौंप दिया। साथ की कार्रवाई के लिए खनन अधिकारी को भी पत्र भेजा गया है। घाटमपुर थाना क्षेत्र के नंदना में अवैध मिट्टी खनन की सूचनाएं मिल रही थीं। इसी के चलते एसडीएम ने तहसीलदार के साथ रात्रि में ही छापेमारी की। अधिकारियों को मौके पर मालिक सहित एक जेसीबी और ठेकेदार के साथ चार ट्रैक्टर ट्रॉली मौके पर अवैध खनन करते मिले। एसडीएम ने सभी वाहनों को पकड़वाकर पुलिस को सौंप दिया। जिन पर सीज की कार्रवाई की गई है। वहीं अवैध खनन पर कार्रवाई के खनन अधिकारी को भी सूचित किया है। एसडीएम ने बताया जानकारी मिलने पर पहुंचे तो खनन होते पाया गया। खनन में लगे वाहनों को सीज कर दिया गया है। वहीं खनन क्षेत्र की जानकारी खनन अधिकारी को दी गई है। जिस पर उनके द्वारा कार्रवाई की जा रही है। उन्होंने आगे बताया कि किसी भी कीमत पर कहीं भी अवैध खनन नहीं होने दिया जाएगा।

शराबी पति से परेशान पत्नी ने पुलिस से

लगाई सुरक्षा की गुहार

घाटमपुर। शराबी पति की हकतों से तंग आकर एक विवाहिता ने थाना सजेती में रिपोर्ट दर्ज कराते हुए पुलिस से मदद की गुहार लगाई है।कहा 10 सालों से वह मायके में रहकर मजदूरी से पेट भर रही है। फिर भी आए दिन शराब के नशे आकर मेरा पति न सिर्फ गालियां बकता है।ए बल्कि जान से मारने की धमकियां देता है। जिससे वह तथा घर के लोग भयभीत व परेशान हैं। थाना क्षेत्र के सरगांव निवासी रीतू शर्मा पुत्री राम प्रकाश शर्मा ने थाना सजेती में रिपोर्ट दर्ज कराते हुए पुलिस को बताया कि उसकी शादी 2009 में कानपुर के पनकी गंगा गंज में रहने वाले अजीत कुमार शर्मा पुत्र हरिशंकर शर्मा के साथ हुई थी।जो शराब पीने का लती होने के साथ शादी के बाद से ही मार पीट करता था। 5 साल तक उसकी हकतों को बर्दाश्त किया। बाद में जब हद हो गई तो विरोध शुरू किया। जिस पर मेरे पति ने गाली गलौज कर घर से निकाल दिया था। तभी से मैं अपने मायके में ही मजदूरी कर जीवन यापन कर रही हूं। हद तो तब हो गई जब यहाँ भी मेरा पति आकर अनावश्यक गाली गलौज व विवाद करता रहता है। उसने समझाने का भरसक प्रयास किया पर वह है कि मानता ही नहीं है।15 मई को तो उसने सारी हदें पार कर दी। मेरे साथ गाली गलौज कर मारपीट को अमादा होने के साथ जान से मारने का प्रयास किया। किसी तरह पड़ोसी के घर घुस कर जान बचाई। वह जान से मारने की धमकी देते हुए चला गया। तब से वह तथा घर के लोग बुरी तरह भयभीत व परेशान हैं।

दबंगों ने सड़क साफ कर रहे मजदूरों के साथ की मार पीट

घाटमपुर। थाना सजेती क्षेत्र के चितौली में रोड निर्माण में मजदूरों के किनारे की सड़क साफ करने को लेकर ट्रैक्टर चालक के भड़कने। मोबाइल तोड़कर मार पीट करने का आरोप लगाते हुए मजदूर ने चालक समेत दो लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। थाना विधुपु क्षेत्र के बंाला निवासी छोटू पुत्र ओम प्रकाश ने पुलिस को बताया कि 3 जून को वह थाना सजेती के ग्राम चितौली में रोड निर्माण में मजदूरी कर रहा था। राया में और भी मजदूर लगे थे।करीब 5 बे सायं ट्रैक्टर से सड़क किनारे सफाई करने को लेकर आए भूरा यादव पुत्र जान सिंह व दो अज्ञात लोग उसके साथ गाली गलौज शुरू कर दिया। विरोध करने पर उन्होंने मोबाइल तोड़ने के बाद उसके साथ मारपीट कर गिरा दिया। शोर सुनकर उसे बचाने आई साथ में काम कर रही विमला पत्नी सुरेन्द्र के साथ भी मार पीट की। जब तक और मजदूर आते आरोपी धमकाते हुए भाग गए।

ऑल इंडिया वुमेन्स कांफ्रेंस ससैया घाट कानपुर शाखा द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन



कानपुर कृ ऑल इंडिया वुमेन्स कांफ्रेंस ससैया घाटए कानपुर शाखा द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में फूलबाग स्थित नाना राव पार्क में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।इस अवसर पर संस्था की सदस्यों ने पर्यावरण संरक्षण के संदेश के साथ बैनर थामकर मानव श्रृंखला बनाई। यह आयोजन आमजन को प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति जागरूक करने हेतु किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य था स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण के लिए जनमानस में चेतना जागृत करना। कार्यक्रम के दौरान इस व्यस्ततम सार्वजनिक स्थल पर राहगीरों में 150 से अधिक पौधे वितरित किए गए। पौधारोपण और उनके संरक्षण का महत्व बताते हुए सदस्यों ने नागरिकों से अधिक से अधिक हरियाली बढ़ाने का आह्वान

हरविंदर कौरए मंजू बांगरएअंजू अग्रवालए रेखा जोहरीए सुभद्रा सक्सेनाए सुपमा वर्माए एकता जैनए पूर्णिमा भागवए अनिला रस्तोगीए ऊषा अग्रवालएमीनू ए शोभा सोनल एदीपिका रस्तोगीए

सहित अन्य सदस्यों की सक्रिय सहभागिता रही। संस्था की ओर से यह संदेश दिया गया कि छोटे.छोटे प्रयास भी पर्यावरण की सुरक्षा में बड़ा योगदान दे सकते हैं।

योगी आदित्यनाथ जी के जन्मदिवस पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने स्वच्छता अभियान चलाया

बिल्हौर बिल्हौर तहसील के पूरा मण्डल में भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी का जन्मदिवस सेवा भाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पूरा मंडल के कार्यकर्ताओं ने विभिन्न स्थानों पर स्वच्छता अभियान चलाया और नागरिकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम की शुरुआत मीडिया प्रभारी अंशुल बाजपेई की अगुवाई में हुई जिसमें मंडल पदाधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए बाजार मंदिर परिसर



सार्वजनिक स्थलों व गांव की गलियों में सफाई कर स्वच्छता का

संदेश दिया। मीडिया प्रभारी ने अपने संबोधन में कहा कि योगी

आदित्यनाथ जी ने उत्तर प्रदेश को स्वच्छ सुरक्षित और विकसित राज्य बनाने का संकल्प लिया है। उनका जन्मदिवस हम सेवा और समर्पण के रूप में मना रहे हैं। इस अवसर पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने स्थानीय लोगों को स्वच्छता प्लास्टिक मुक्त पर्यावरण तथा जल संरक्षण के प्रति जागरूक किया और स्वच्छता की शपथ भी दिलाई। इस मौके पर नीलू पाल संतोष बाढ़पेई रवि श्रीवास्तव निर्विकार राठौर अखिलेश सैनी आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

समाजवादी पार्टी की मासिक बैठक हुई आयोजित



आशीष चौबे विनय यादव हरिओम पांडे लोकेश अवस्थी जगरूप सिंह यादव आशीष कटियार चुन्नी लाल गौतम राजू पाल सुनील कुमार यादव वीरेंद्र कुमार वर्मा शशिकांत पाल राम सरन गौतम विवेक कटियार अनिल कुशवाहा रजनेश कुमार अंशुमान यादव गोपी नाथ पासी संतोष पाल सुनील पाल कल्लू कुलदीप पाल इंद्रेश यादव जीतू सैनी अरुण सभासद दीपू शाहबाद के पी यादव धीरेंद्र यादव कुलदीप यादव आदर्श कटियार अंकित चक्रवर्ती शैलेन्द्र कटियार आदि सपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे

कस्बा साढ़ में हुआ शर्बत वितरण

भीतरगांव। गुरुवार को कस्बा साढ़ में जय कामदगिरि ट्रेडर्स के द्वारा विशाल शरबत वितरण का कार्यक्रम किया गया जिसमें सैकड़ों लोगों ने शरबत पीते हुए कार्य की सराहना की।

कस्बा साढ़ चौराहे में कामदगिरि ट्रेडर्स के वरुण बाजपेई प्रधान जगदीश यादव मानस बाजपेई ऋषभ यादव अश्वनी यादव अहमद इलेक्ट्रानिक आदि लोगो ने बताया कि भीषण गर्मी देखते हुए लोगों को प्यास से राहत दिलाने के लिए दोपहर बाद से देर शाम तक शरबत वितरण किया गया जिसमें राहगीरों सहित कस्बे के व्यापारियों ने सहभागिता दिखाई।



तिरहर पट्टी में 20 नए नलकूपों की होगी स्थापना-सरोज कुरील

विधानभवन लखनऊ में अनुसूचित जातिएं अनुसूचित जनजाति एवं विमुक्त जातियों संबंधी हुई संयुक्त समिति की बैठक में विधायक ने रखा प्रस्ताव



घाटमपुर।विधानभवन में गुरुवार को हुई अनुसूचित जातिएं अनुसूचित जनजाति एवं विमुक्त जातियों संबंधी संयुक्त समिति की हुई बैठक में एक बार फिर विधायक ने विधान सभा क्षेत्र ज्वलंत मुद्दों को जोर शोर से उठाया। जिसमें पिछड़ा क्षेत्र मानी जाने वाली तिरहर पट्टी क्षेत्र में कैनाल परियोजना लागू जाने की मांग प्रमुख रूप से शामिल रही। इनके अलावा सिंचाई एवं जलएसंसाधन विभाग के साथ भी विधायक ने महत्वपूर्ण बैठक में कई और मुद्दे भी जोर शोर से उठाए। बैठक सभापति श्रीराम चौहान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। विधायक सरोज कुरील ने जिसकी जानकारी देते हुए आगे बताया कि तिरहर पट्टी में जमुना नदी की ओर कैनाल परियोजना स्थापित की जाएगी। ताकि क्षेत्रीय सिंचाई व्यवस्था को सशक्त बनाया जा सके। उन्होंने आगे बताया कि 20 नए नलकूपों की स्थापना कराए जाने का भी प्रस्ताव प्रस्तावित है। उन्होंने आगे बताया कि घाटमपुर विधानसभा क्षेत्र में वर्षों से निष्क्रिय पड़े 35 नलकूपों का रिबोर कराए जाने तथा उनका पुनः संचालन सुनिश्चित किए जाने की भी मांग की गई है।

केकेआर ने अनुराग वॉरियर्स को 4 विकेट से हराया

घाटमपुर। मूसानग रोड़ पर स्थित केप्टन सुखवासी सिंह जनता महा विद्यालय में चल रहे घाटमपुर प्रीमियम लीग मच के तीसरे दिन केकेआर ने अनुराग वॉरियर्स को 4 विकेट से हराया। आज का मैन ऑफ द मैच अतुल सचान को सभासद पति शिवकरण सचान द्वारा दिया गया। लीग मैच के संयोजक भूप किशोर विश्वकर्मा ने बताया कि टॉस जीतकर केकेआर ने पहले फील्डिंग करने का निर्णय लिया। अनुराग वॉरियर्स ने 20 ओवर में सभी विकेट खोकर 80 रन बनाए। अनुराग वॉरियर्स की तरफ से सबसे ज्यादा रन देवांश तिवारी ने 21 गेंद में 20 रन बनाए और अभिनव पाल ने 5 गेंद में 11 रन बनाए। अनुराग वॉरियर की तरफ से बोलिंग करते हुए सबसे ज्यादा विकेट सक्षम प्रजापति ने चार ओवरों में तीन विकेट लिए और रिशु ने तीन ओवर में तीन विकेट लिए लख का पीछा करने उतरी के के आर की टीम ने 6 विकेट खोकर 10 ओवर में मैच जीत लिया के के आर की तरफ से बैटिंग करते हुए सबसे ज्यादा रन अर्सलान सिद्दीकी 22 दिनों में 33 रन बनाए।जय प्रजापति ने 13 गेंद में 15 रन बनाए।



गंगा दशहरा पर शरबत वितरण का आयोजन

चौबेपुर क्षेत्र के रौतापुर बम्बा पर गंगा दशहरा के पावन अवसर पर शरबत वितरण का आयोजन किया गया। गंगा स्नान को आ जा रहे श्रद्धालुओं को शरबत वितरित किया गया। समाजसेवकों ने श्रद्धालुओं को शरबत पिलाकर दशहरा का पर्व मनाया गंगा स्नान को जा रहे श्रद्धालुओं को रोककर पर्व की खुशियां मनाई। इस अवसर पर रौतापुर बम्बा के धार्मिक स्थलों पर भी विशेष पूजा,अर्चना का आयोजन किया गया।इस मौके पर अवधेश मिश्रा पूर्व प्रधान ऋषि शुक्ला सत्यम अवस्थी मानस मिश्रा सौरभ शुक्ला ; रामजी ढ्विषशल सविता और प्रेमू शुक्ला मौजूद रहे

एसडीएम ने पतारा में लगाई चौपाल में सुने

भूमि सम्बन्धी विवाद

घाटमपुर।आईजीआरएस व सम्पूर्ण समाधान दिवस में सबसे ज्यादा शिकायतें पतारा क्षेत्र की आने को देखते हुए गुरुवार को एसडीएम अबिचल प्रताप सिंह पतारा पहुंचे। जहां नायब तहसीलदार की अध्यक्षता में लगी चौपाल में एसडीएम के आने की खबर फैलते ही समस्याओं को लेकर पहुंचने वालों की भीड़ लग गई। एसडीएम ने एक एक को बुलाकर न सिर्फ समस्याएं सुनी बल्कि 9 जमीन से संबंधित आई शिकायतों को सुनने के साथ दो का मौके पर निस्तारण कर बाकी समस्याओं के निस्तारण के लिए नायब तहसीलदार की अध्यक्षता में राजस्व व पुलिस संयुक्त टीम बनाकर जाँच के साथ निस्तारण करने को कहा। एसडीएम अबिचल प्रताप सिंह ने बताया आईजीआरएस व सम्पूर्ण समाधान दिवस में सबसे ज्यादा शिकायतें पतारा क्षेत्र की आने को देखते वहां चौपाल लगाकर समस्याओं का निस्तारण किया गया है।

पालिकाध्यक्ष पति ने सभासदों संग किया पौधरोपण

घाटमपुर। गुरुवार को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पालिका परिसर में पालिकाध्यक्ष गजाला तबस्सुम व अधिशाषी अधिकारी डब महेंद्र कुमार ने पौध रोपण करने के साथ पौधों की देख रेख का खुद व कर्मचारियों को संकल्प के साथ शपथ दिलाई। वहीं वृहद गौशाला में पालिकाध्यक्ष पति हाफिज अब्दुल अहद ने सभासदों विवेक शुक्ला व गुडू पटान आदि के साथ पौधरोपण किया।पौधरोपण के दौरान कंटीक्टर केशरी सिंह व गणमाय्य लोग भी मौजूद रहे।इस अवसर पर पालिकाध्यक्ष पति ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस सतत जीवन शैली के बारे में जागरूकता बढ़ाने में भी मदद करता है।

कानपुर विकास प्राधिकरण	आवश्यक सूचना
एतद्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि भवन सं०-102 मिनी एल०आई०जी० क्लाक-सं०-फैस-5 जेनरा सं०-40, बर-5 कानपुर क्षेत्रफल 31.32 वर्गमी० भू-उपयोग आवासीय को फी-होल्ड विलेज कानपुर विकास प्राधिकरण द्वारा दिनांक 23.09.2008 को भी विनय बहदुर सिंह पुत्र श्री माधव सिंह द्वारा मुख्यालय श्री श्याम कुमार पुत्र अननन राम के पक्ष में विधायित की गयी। जिसके उपरान्त फी-होल्ड धारक श्री विनय बहदुर सिंह पुत्र श्री माधव सिंह द्वारा मुख्यालय श्री श्याम कुमार पुत्र अननन राम द्वारा उक्त भवन का पंजीकृत बनाया दिनांक 02.09.2021 को श्रीमती माया दुबे पत्नी श्याम कुमार दुबे के पक्ष में किया गया। बेनामा धारिका श्रीमती माया दुबे की दुबे की मृत्यु दिनांक 19.12.2022 को हो चुकी है। जिसकी पुष्टि प्रस्तुत किये गये मृत्यु प्रमाण पत्र से होती है। जिसके उपरान्त इनके वारिसांन द्वारा पारिवारिक सदस्यता प्रमाण पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र व फोटोयुक्त शपथ पत्र प्रस्तुत करते हुये अपने पक्ष में संयुक्त रूप से नामान्तरण किये जाने का अनुरोध किया गया है। कार्यालय उप जिलाधिकारी (सर) कानपुर नगर को पत्र सं०-2111/अध०मी००/2023 दिनांक 10.04.2023 के अनुसार मुक्तका रय० माया दुबे पत्नी श्री श्याम कुमार दुबे के निम्नलिखित पारिवारिक सदस्य है:- 1. श्री श्याम कुमार दुबे मुक्तका का पति उम्र 65 वर्ष 2. श्री संजय कुमार द्विवेदी मुक्तका का पुत्र उम्र 40 वर्ष 3. श्री सचिन दुबे मुक्तका का पुत्र उम्र 38 वर्ष 4. श्री बुवेश दुबे मुक्तका का पुत्र उम्र 36 वर्ष उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य कोई पारिवारिक सदस्य तदीक नहीं किया गया है। क्रमांक सं०-1 से 4 पर अंकित सदस्यों श्री श्याम कुमार दुबे, श्री संजय कुमार द्विवेदी, श्री सचिन दुबे व श्री बुवेश द्वारा भवन का नामान्तरण अपने पक्ष में संयुक्त रूप से किये जाने का अनुरोध किया गया है। उक्त भवन का नामान्तरण किये जाने में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो या कोई अन्य अनाथ अधिकार रखता हो तो अपने सम्पूर्ण साक्ष्यों सहित प्रकाशन तिथि से 30 दिन के अन्दर लिखित आपत्ति अधिसूक्षरी के कार्यालय विवेक जेन-3 में दाखिल कर सकता है, उक्त अवधि के पश्चात प्राप्त आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा तथा पारिवारिक सदस्यता प्रमाण पत्र, मृत्यु प्रमाण के आधार पर नामान्तरण की कार्यवाही प्रारम्भ कर दी जायेगी तथा भविष्य में किसी कलेम/दावा पर विचार किया जाना सम्भव न होगा।	विशेष कार्याधिकारी (विवेक जेन-3)

कार्यालय- उपजिलाधिकारी, जालौन जनपद- जालौन

पत्रांक:- 375 / रा०का० जालौन /मत्त्य पद० नीलामी /2025-26 दिनांक:-29.05.2025

विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है। कि तहसील जालौन जनपद जालौन के निम्नलिखित ग्राम सभाओं में निहित तालाबों/पोंखरों का 10 वर्षीय मत्स्य पालन पट्टा/अवंदन हेतु उ०अ० राजस्व सँचाला निम्नावली 2016 में निहित प्राधिकारों के अन्तर्ग निम्न 57 धारा 61 की उपधारा 115 में किये गये प्राधिकारों के तहत तहसील कार्यालय जालौन के तत्त्वाार में दिनांक-08.07.2025 को आरम्भ कर 1100 बजे से 1200 बजे तक की जायेगी। नीलामी तिथिपर 2,000 हेक्टरपर से कम क्षेत्रफल वाले तालाबों का अवंदन प्रथम वरीयता के अनुसार कैन्ट, कहार, मल्लाह, महुआ समुदाय एवं द्वितीय वरीयता के अनुसार अनुसूचित जाति तथा तृतीय वरीयता के अनुसार अन्य पिछड़ा वर्ग व अन्य व्यक्तिओं को आवंटित किया जायेगा। अवंदन की न्यूनतम दर रु०-5000 /प्रति हेक्टर प्रति वर्ष से कम नहीं होगी। तथा 2,000 हेक्टर से बड़े तालाबों का पट्टा/नीलामी मत्स्य जीवी सहकारी समितियों के बीच होगी जिसकी दर रु०-10000 प्रति हेक्टर प्रति वर्ष से कम नहीं होगी। नीलामी में भाग लेने वाले व्यक्ति को आम प्रमाण पत्र एवं जाति प्रमाण पत्र दाखिल करना अनिवार्य होगा।

क्र० सं०	राजस्व ग्राम का नाम	तालाब का गाटा सं०	क्षेत्रफल (है०)	क्र०स०	राजस्व ग्राम का नाम	तालाब का गाटा सं०	क्षेत्रफल (है०)
1	कुँवादा खुई	26	4.009	25	खनुबा	267	1.008
2	विजयाहा	302	4.094	26	वीरपुरा	168ख	0.955
3	सन्तपुरा	574	0.530	27	खनुबा	417	2.350
4	कुलीद	609	1.344	28	खर्वा	521	0.729
5	कनपुरा	40	1.141	29	नूरजपुरा	107	0.789
6	कुवरपुरा	258	1.935	30	नूरजपुरा	124	1.007
7	मदारीपुर	107	0.458	31	गडगुर्वा	420	0.688
8	मदारीपुर	443	0.522	32	गावर	203	1.096
9	नाहली	130	0.999	33	हनुवा बुजुर्ग	293	0.906
10	हरकौली	344	0.809	34	छिरिया मनेमपुर	128	0.870
11	अकोठी दुबे	203	1.096	35	शहजादपुरा	558	0.433
12	उदातपुरा	182	0.243	36	नायर	203	1.096
13	नाहली	311	0.251	37	जरगांव	177	0.809
14	अकोठी दुबे	188	0.737	38	जरगांव	957	0.906
15	अकोठी दुबे	81	0.914	39	जहटीली	148ख	2.869
16	कुटीर	338	1.659	40	कुटीर	744	0.458
17	आमपुरा जागीर	15	0.733	41	जरगांव	957	0.906
18	कांसीपुरा	126	1.457	42	परतापपुरा	99	0.506
19	कुंवरपुरा	431	1.935	43	मीमपुरा	106	0.833
20	करनवापुर	323	0.526	44	पर्वतपुर	329	0.761
21	करनवापुर	165	0.655	45	पहाड़पुरा	80	1.242
22	करनपुरा	40	1.141	46	परतापपुरा	99	0.506
23	हीरापुर	415	0.890	47	नाहली	386	0.559
24	कुतबपुर	177	0.806	48	हरसिंहपुर	263ख	0.8250

उपजिलाधिकारी जालौन

कार्यालय नगर पंचायत खखरेरू-फतेहपुर

पत्रांक- 84 / न०पंच० ख० / नि०प्र० / 2025-26 दिनांक- 05.06.2025

ई-निविदा सूचना

एतद्वारा सूचित किया जाता है कि नगर पंचायत खखरेरू, जनपद फतेहपुर के द्वारा 'मुख्यमंत्री नगर सृजन योजना' के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2024-25 में प्राप्त धनराशि से निर्माण कार्य कराया जाना है। जिसके लिए अधोलिखित विवरण अनुसार ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। ई-निविदा की समस्त कार्यवाही ई-प्रोक्वायरेमेंट की वेबसाईट https://etender.up.nic.in के माध्यम से की जायेगी। ई-निविदा का विवरण नियम व शर्तें निम्नवत है-

ई-निविदा समय सारणी

1.	वेबसाईट पर ई-निविदा प्रकाशन की तिथि / समय	दि०-06.06.2025 को 10.00 AM
2.	ई-निविदा डाउनलोड / अपलोड की प्रारम्भ तिथि / समय	दि०-06.06.2025 को 10.00 AM
3.	ई-निविदा डाउनलोड / अपलोड की अन्तिम तिथि / समय	दि०-16.06.2025 को 05.00 AM
4.	ई-निविदा की टेनिकल बिड खोलने की तिथि / समय	दि०-17.06.2025 को 10.00 AM

अधिशासी अधिकारी	अध्यक्ष
नगर पंचायत खखरेरू फतेहपुर	नगर पंचायत खखरेरू फतेहपुर

स्वतंत्र भारत

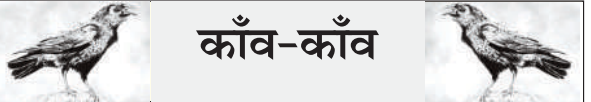
यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

जश्न की त्रासदी

जीत के जश्न में मौत का मातम ऐसी त्रासदी है जो उपजती तो हमारे संवेगों से है लेकिन व्यवस्थागत खामियां उसकी तीक्ष्णता-गंभीरता को कई गुना बढ़ा देती हैं। आईपीएल में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलूर की जीत के बाद बुधवार को बेंगलुरु के चिन्नास्वामी स्टेडियम में उमड़े लाखों क्रिकेटप्रेमियों की भीड़ में भगदड़ मचने से 11 लोगों की मौत इसी का ताजा उदाहरण है। लंदन में ऐसे ही एक विकट्री सेलिब्रेशन में गत सप्ताह भीड़ के बेकाबू होने से भगदड़ मची और दो लोगों की जान चली गई। फुटबाल के मैचों और उनके जश्न में तो उत्तेजना चरम पर रहकर बेकाबू हो जाती है। इसीलिए स्पेन, ब्राजील, अर्जेंटीना, इटली जैसे इसके दिवानों के देशों में ऐसे आयोजनों के दौरान बड़ी संख्या में मौतें आम खबरें होती जा रही हैं। भीड़ का उग्र मनोविज्ञान केवल खेल की उत्तेजना और जोश के आवेग में ही नहीं होता बल्कि धार्मिक आयोजनों आस्था के ज्वार से गुजरते हुए बड़ी संख्या में महिला और पुरुष श्रद्धालु भी इसके शिकार होते रहते हैं। देश के कई छोटे बड़े शहरों में ऐसी दुखद घटनाएं होती रही हैं। कहीं जुटे हुए लोग बेहद जोश में होते हैं, कहीं ज्यादा भीड़ के कारण एक-दूसरे पर गिरने से घबरा जाते हैं, कभी किसी अफवाह पर भड़कते हैं, कहीं आगे जाने में विवाद होता है, कहीं आयोजन स्थल से निकलने के पर्याप्त इंतजाम न होने से भगदड़ मचती है। इनके पीछे बड़ी संख्या में मौजूद लोगों के हजूम पर नियंत्रण न पाना और सुदृढ़ व्यवस्था न होना मुख्य वजह है। बेंगलुरु की घटना के पीछे भी यही कारण था और पूर्व के हादसे भी मुख्य रूप से इन्हीं वजहों से हुए थे। ऐसी घटनाएं बार-बार हो रही हों तो इन्हें एक जरूरी सबक के तौर पर याद रखा जाना चाहिए। आमतौर पर ऐसी घटनाओं में व्यवस्था के लिए जिम्मेदार अधिकारियों की सफाई होती है कि हमें इतनी बड़ी संख्या में लोगों के आने का अंदाजा नहीं था। ये वह भी नहीं सोच पाए कि देश के युवाओं पर क्रिकेट का बुखार किस बुरी तरह हावी है और ऐसे मौके पर फैन्स तो उमड़ेंगे ही। शायद इतनी स्वाभाविक बात सोचने की भी अप्सरों को फुरसत नहीं थी। अब आप भले ही शोक जता दीजिए, मरने वालों के परिजनों को पैसा दे दीजिए, जांच बैठा दीजिए लेकिन उन लोगों का जीवन तो वापस नहीं आने वाला जो केवल सही इंतजाम न होने का शिकार बन गए। चूँकि आज की व्यवस्था केवल बयानों व कागज का पेट भरने से ही चलती है तो फिर ऐसे हादसे होंगे ही।

नया लेनदेन

बीती मई में यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस यानी यूपीआइ के जरिये लेन-देन में 4.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जो डिजिटल लेन-देन में बढ़ोतरी का संकेत है। आंकड़े के मुताबिक, बीते महीने यूपीआइ से लेन-देन संख्या के हिसाब से 18.68 अरब और मूल्य के हिसाब से 25.14 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया, जो अप्रैल, 2016 में डिजिटल भुगतान व्यवस्था लागू होने के बाद से अब तक का सर्वाधिक है। जबकि अप्रैल में यह आंकड़ा 23.95 लाख करोड़ रुपये का था। मई, 2024 से तुलना करें, तो मई, 2025 में यूपीआइ से लेन-देन में संख्या के हिसाब से 33 प्रतिशत की, जबकि मूल्य के लिहाज से 23 फीसदी की वृद्धि हुई। सच्चाई यह है कि 2016 में शुरू होने के बाद से ही यूपीआइ के इस्तेमाल में लगातार तेजी आयी है। नोटबंदी के बाद डिजिटल पेमेंट को तो बढ़ावा मिला ही, स्मार्टफोन के इस्तेमाल में वृद्धि तथा गूगल पे, फोन पे, पेटीएम जैसे निजी एप्स की शुरुआत ने यूपीआइ को और लोकप्रिय बनाया। हालाँकि अब इसकी रफ्तार थोड़ी धीमी हो रही है। फोनपे और गूगल पे जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने यूपीआइ की बाजार हिस्सेदारी पर कुछ कब्जा किया है। यूपीआइ को और बढ़ावा देने के लिए सरकार ने 1,500 करोड़ रुपये की प्रोत्साहन योजना को मंजूरी दी है, ताकि छोटे डिजिटल लेन-देन का खर्च कम हो सके। यूपीआइ अब सिंगापूर, मॉरीशस, संयुक्त अरब अमीरात, श्रीलंका, फ्रांस, भूटान और नेपाल आदि में भी अपनी पहुंच बढ़ा रहा है। इससे भारतीय पर्यटक, छात्र और व्यावसायिक यात्री अपने घरेलू यूपीआइ एप के जरिये भुगतान कर सकते हैं। पिछले कुछ महीनों में यूपीआइ में कुछ तकनीकी समस्याएं भी आयीं। जैसे, अप्रैल में सर्वर पर ज्यादा दबाव के कारण एक दिन पेमेंट और फंड ट्रांसफर में पेशानी आयी थी। मई में डिजिटल पेमेंट के दूसरे प्लेटफॉर्मों में भी लेन-देन में वृद्धि हुई है। विशेषाभास यह है कि डिजिटल लेन-देन में वृद्धि के साथ नकदी में लेन-देन भी बढ़ रहा है। खासकर पांच सौ रुपये का नोट नकदी का प्रमुख रूप बन गया है, जो मात्रा के हिसाब से सभी बैंक नोटों का 41 प्रतिशत और कुल मूल्य का 86 प्रतिशत है, जबकि सरकार कम मूल्य वाले नोटों का प्रचलन बढ़ाने की कोशिश में है।



काँव-काँव

आरसीबी विकट्री परेड भगदड़ में ग्यारह दिवंगत
क्या मजाल कि कोई आयोजकों को जेल भेजे!
न्यायपालिका की स्वतंत्रता सबसे ऊपर है-गवई
राज्यसभा की सदस्यता भी मामूली बात नहीं!
अगले सप्ताह से फिर रफ्तार पकड़ेगा मानसून
तब तक नाला सफाई की बंदरबांट तय हो जाये!
आपरेशन सिंदूर में स्वदेशी हथियारों की ताकत
पहलगाम में दिखी आंतरिक सुरक्षा की हालत!
सेना के अपमान पर राहुल को कोर्ट की फटकार
यूं बदनाम हम जो हुए तो क्या नाम न होगा!
देश में अगले वर्ष मार्च से शुरू होगी जनगणना
विस्थापितों के लिये यही सबसे सुनहरा अवसर!



भीड़ का हिस्सा नहीं, संवेदनशील सहभागी बनें

भा रत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और खेल आयोजन हमारी सांस्कृतिक विविधता और सामूहिक उत्साह के प्रतीक हैं। ये आयोजन निरंतर होते रहते हैं, किंतु जब यही उत्सव असंवेदनशीलता, अव्यवस्था और अनुशासनहीनता के कारण त्रासदी का रूप ले लेते हैं, तो एक गंभीर प्रश्न उठता है-क्या हम केवल एक भीड़ हैं या एक जिम्मेदार समाज? क्या भीड़ प्रबंधन केवल शासन-प्रशासन की जिम्मेदारी है? क्या सहभागियों का कोई दायित्व नहीं बनता? हमारे देश में भीड़ के अनियंत्रित होने के कारण अनेक त्रासद घटनाएं घट



- डा. मनमोहन प्रकाश

चुकी हैं। 1954 के प्रयागराज कुंभ में हुई भगदड़ स्वतंत्र भारत की पहली बड़ी चेतावनी थी, जिसने प्रशासनिक सीमाओं को उजागर किया। इसके बाद 2003 में नासिक कुंभ; 2008 में नांदेड़ (हुजूर साहिब गुरुद्वारा), नैना देवी मंदिर (हिमाचल प्रदेश);2011में पुलुमेदु मकर संक्रांति मेला, केरल; 2013 में रतनागढ़ मंदिर, दत्तिया (मध्य प्रदेश);2014 में पटना देवी मंदिर (बिहार), डेलोरी गांव (वाराणसी),2014 में दशहरा समारोह, पटना;2015 में पुष्कर उत्सव, राजमुंदरी (आंध्र प्रदेश);2022 में वैष्णो देवी मंदिर;2023 में कुबेरेश्वर धाम, रुद्राक्ष महोत्सव;2024 में हैदराबाद थिएटर हादसा;2024 में हाथरस, सतसंग के बाद भगदड़;2025 में महाकुंभ हादसा, नई दिल्ली खेलवे स्टेशन हादसा, चिन्नास्वामी स्टेडियम (बेंगलुरु) के बाहर आईपीएल विजय का जश्न जैसे आयोजनों में विभिन्न कारणों से भीड़ अनियंत्रित हुई, भगदड़ मची और कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी।

इन हादसों की जिम्मेदारी किस पर डाली जाए? क्या आयोजनकर्ता पूर्णतः दोषी हैं? क्या प्रशासनिक व्यवस्था ही विफल रही? या फिर क्या भीड़ में शामिल हर व्यक्ति को भी आत्ममंथन नहीं करना चाहिए? भीड़भाड़ वाले आयोजनों में भाग लेना अनुचित नहीं है, किंतु सहभागी बनने से पहले कुछ मूलभूत प्रश्नों पर विचार करना आवश्यक है क्या आयोजन को प्रशासन से अनुमति प्राप्त है?; आयोजन स्थल की क्षमता और व्यवस्था कैसी है?;क्या यह आयोजन केवल आमंत्रित या पासधारकों के लिए है या सभी के लिए खुला है?; निजी वाहन लेकर वहां जाना कितना उचित है?;

क्या भीड़ में मेरी उपस्थिति आवश्यक है या घर से भी इसे देखा जा सकता है?आज के तकनीकी युग में बहुत से आयोजन घर बैठे टीवी या डिजिटल माध्यमों से देखे जा सकते हैं। यदि हर व्यक्ति यह मान ले कि वह केवल दर्शक नहीं, बल्कि आयोजन का सह-व्यवस्थापक है, तो कई समस्याएं स्वतः समाप्त हो सकती हैं। हम यह भूल जाते हैं कि लाइन तोड़ने वाला,



धक्का देने वाला, गेट पर चिखरने वाला,शोर मचाते हुए झुंड लहंगते हुए तेज रफ्तार में दो पहिए वाहन चलाने वाला,अफवाह फैलाने वाला, नियमों की अनदेखी करने वाला व्यक्ति स्वयं अव्यवस्था का हिस्सा बन जाता है। भीड़ प्रबंधन केवल पुलिस बल, बैरिकेडिंग, स्मार्ट निगरानी प्रणाली,

भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और खेल आयोजन हमारी सांस्कृतिक विविधता और सामूहिक उत्साह के प्रतीक हैं। ये आयोजन निरंतर होते रहते हैं, किंतु जब यही उत्सव असंवेदनशीलता, अव्यवस्था और अनुशासनहीनता के कारण त्रासदी का रूप ले लेते हैं, तो एक गंभीर प्रश्न उठता है-क्या हम केवल एक भीड़ हैं या एक जिम्मेदार समाज? क्या भीड़ प्रबंधन केवल शासन-प्रशासन की जिम्मेदारी है? क्या सहभागियों का कोई दायित्व नहीं बनता? हमारे देश में भीड़ के अनियंत्रित होने के कारण अनेक त्रासद घटनाएं घट चुकी हैं। 1954 के प्रयागराज कुंभ में हुई भगदड़ स्वतंत्र भारत की पहली बड़ी चेतावनी थी, जिसने प्रशासनिक सीमाओं को उजागर किया।

सीसीटीवी, ड्रोन, RFID टैगिंग, इमरजेंसी रिस्पॉन्स सिस्टम, मोबाइल ऐप्स, हाईटेक लाउडस्पीकर या वचुअल रूट मैपिंग से संभव नहीं। इसका मूल आधार है अनुशासन, संवाद और नागरिक सहयोग। एक जिम्मेदार सहभागी वही होता है जो समय का पालन करे, अनुशासन में रहे,अफवाहों से बचे,दूसरों की सुविधा का उतना ही

बल्कि हमारे सामूहिक असंवेदनशील और गैर-जिम्मेदार व्यवहार का भी परिणाम होते हैं। जांच रिपोर्ट, मुआवजा और खेद-प्रकट करना पर्याप्त नहीं। जरूरत है आत्मचिंतन और सक्रिय नागरिक सहभागिता की। अब समय आ गया है कि हम आयोजनों को केवल 'उपस्थित रहने' की प्रक्रिया न मानें, बल्कि अपनी भूमिका को रचनात्मक रूप से

परिभाषित करें। जब हर नागरिक स्वयं को उत्तरदायी मानेगा, तभी भारत की आयोजन-संस्कृति सुरक्षित, गरिमामय और प्रभावशाली बन सकेगी। अतः भीड़ नहीं-संवेदनशील, दायित्ववान और अनुशासित सहभागी बनना ही आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

ध्यान रखे जितना अपनी, असहज, असह्य लोगों की मदद करे,प्रशासन का सहयोग करे।यह आचरण किसी कानून या प्रशिक्षण से नहीं आता, बल्कि सामाजिक चेतना और नैतिक अनुशासन से उत्पन्न होता है। हमें यह स्वीकार करना होगा कि हादसे केवल व्यवस्था की विफलता नहीं,

परिभाषित करें। जब हर नागरिक स्वयं को उत्तरदायी मानेगा, तभी भारत की आयोजन-संस्कृति सुरक्षित, गरिमामय और प्रभावशाली बन सकेगी। अतः भीड़ नहीं-संवेदनशील, दायित्ववान और अनुशासित सहभागी बनना ही आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

बकरीद : त्याग, श्रद्धा और इंसानियत का संदेश

दुनियां के वजूद मे आने के साथ ही ईश्वर ने मानव को समाज मे रहने के लिए त्याग, समर्पण और बलिदान के लिए प्रेरित किया।इसी लिए बलिदान हर महजब मे ईश्वर को पाने का प्रबल हथियार बन गया। यही बलिदान हमारे अंदर देश प्रेम,समाज प्रेम, इंसानियत और वतन परस्ती का जज्बा



- शाहिद नकवी

पैदा करता है। सच बलिदान ही हमें देश विरोधी ताकतों से लड़ने की प्रेरणा देता है। सामाजिक रीतिरिवाज ,उत्सव और त्योहार इंसानों के भक्ति भाव को परखने का जरिया भी बने। दुनिया में कोई भी कौम ऐसी नहीं है जो कोई एक खास दिन त्योहार के रूप में न मनाती हो।इन त्योहारों में एक तो धार्मिक आस्था विशेष रूप से देखने को मिलती है और अन्य सम्प्रदायों व तबकों के लोगों को उसे समझने और जानने का अवसर

मिलता है। इसी तरह मुसलमानो के लिए ईद उल अज्हा त्याग और बलिदान का पर्व है,जिसे भारत और दूसरे पड़ोसी देशों में लोकभाषा मे बकरीद कहा जाता है।बकरीद, जिसे ईद-उल-अज्हा के रूप में भी जाना जाता है, इस्लाम में दो प्रमुख त्योहारों में से एक है,दूसरा ईद-उल-फितर है। यह त्योहार इस्लामी चंद्र कैलेंडर के अंतिम महीने, जिल-हिज्जा की 10वीं तारीख को मनाया जाता है और पैगंबर इब्राहिम (अब्राहम) की वह कहानी याद करता है, जब उन्होंने अल्लाह की आज्ञा मानते हुए अपने बेटे, इस्माइल को कुर्बान करने की इच्छा दिखाई हालांकि,अल्लाह ने उनकी परीक्षा लेने के बाद एक भेड़ प्रदान की,जिसे कुर्बान किया गया। यहां ईश्वर ने हजरत इब्राहीम की अपने प्रति मोहब्बत की परीक्षा लेकर,दुःखा भेजा जो दो बड़े संदेशों की तरफ इशारा करते हैं।एक तो अगर इस्माइल पर खूी चल जाती तो फिर रहती दुनियां में कुर्बानी के नाम पर इंसानों के खून की परम्परा पड़ जाती। दूसरे कर्बला में पैगम्बर मुहम्मद साहब के नवासे हजरत इमाम हुसैन की अल्लाह की रह में दी गई अजीम कुर्बानी लोगों को समझ में नहीं आती।अन्याय के खिलाफ आवाज दब जाती, कानून के शासन को चुनौती मिलती, इंसानियत, भाईचारा, परिवारिक रिश्तों की अहमियत और ईश्वर के प्रति इंसान की जवाबदेही,गरीबों और मजदूरम्यों के साथ खड़े होने की समझ, देश और समाज

के प्रति वफादारी, जिम्मेदारी और त्याग की भावनाएं हियों नहीं जाती। इसी लिए ये यह त्योहार विश्वास, समर्पण,और सामुदायिक एकता के मूल्यों पर जोर देता है,जो समाज में शांति और सामंजस्य को बढ़ावा दे सकते हैं। प्रथम दृष्टि मे तो ये एक जानवर की बलि देने की पुरातन परम्परा जैसा दिखता है लेकिन वास्तव मे इसकी मूल भावना कुर्बानी है। यह कुर्बानी इस संस्कृत्य का प्रतीक है कि यदि जरूरत पड़े तो ईश्वर की रह,देश और समाज के लिए हम अपनी सबसे प्रिय चीज त्याग कर देंगे।जुहिर है कि जब ईश्वर के प्रति बलिदान का भाव पैदा हो जायेगा तो फिर देश,समाज और परिवार के प्रति भी बलिदान का जज्बा पैदा हो जायेगा।इसी लिए हजारों साल से दुनिया भर के मुसलमान इस्लामी कैलेंडर के आखिरी महीने जिलहिज की 10 तारीख को यानी ईद उल अज्हा के दिन अपनी हैसियत के मुताबिक कुर्बानी करते हैं।दरअसल हर इंसान के अंदर अंधकार है,उसके पार जाने की जिजीविशा ही उसमे भवर्ति भाव पैदा करती है । मौजूदा समय को अंधेरी गलियों मे रास्तों की तलाश है। परम्परागत त्योहारों की मूलभावना और मन की शुचिता हमें रास्ता दिखा सकती है।लेकिन हमें इन उत्सवों के वास्तविक अर्थ को समझना और अपनाना होगा।किसी पिछे बातों को पीछे छोड़ कर इन के संदेशों से भी आगे सोचना

होगा।यह बात स्पष्ट है कि किसी अच्छे समाज के निर्माण में बलिदान और समर्पण की भावना का विशेष योगदान होता है। इससे समाज में एकता व भाईचारे का प्रचार-प्रसार होता है और वह समाज प्राप्ति करता है।ईद उल अज्हा उस महान कुर्बानी की याद दिलाता है जिसे हजारों साल पूर्व मुसलमानो,ईसाईयों और यहूदियों के पैगम्बर हजरत इब्राहीम असी ने अल्लाह की रह मे पेश की थी और इंसानों को ये संदेश दिया था कि उन्हें सच्चाई और मानवता की रह मे कुर्बान होने के लिए



हमेशा तैयार रहना चाहिए।कहने की आवश्यकता नहीं कि जब इंसान का हृदय पवित्र हो जाएगा और अल्लाह के लिए उसका पूर्ण समर्पण होगा तो इसका प्रभाव उसके पूरे जीवन और समाज पर भी पड़ेगा।यह हर बुरे काम से और

मानवता के विरुद्ध कोई भी काम करने से बचेगा।ईश्वर को खुश रखने के लिए लोगों के साथ में भलाई करेगा।दयावान बनेगा,और इस तरह एक सभ्य और आध्यात्मिकता से पूर्ण समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध होगा।दरअसल बकरीद का मूल संदेश त्याग,समर्पण,एकता और मानवता की सेवा से जुड़ा है,जो आतंकवाद जैसे सामाजिक और वैश्विक संकट से उबरने में प्रेरणा प्रदान कर सकता है।बकरीद का त्योहार हजरत इब्राहिम के समर्पण और अल्लाह के प्रति विश्वास की कहानी को

गरीबों और जरूरतमंदों के साथ बांटने की परंपरा सामाजिक समावेश और सहानुभूति को बढ़ावा देती है।आतंकवाद अक्सर सामाजिक असमानता और अलगाव से उपजता है।बकरीद का यह पर्वतु समाज में समानता और करुणा को बढ़ाकर आतंकवाद के मूल कारणों को कम करने में मदद कर सकता है।बकरीद लोगों को आत्म-मंथन और नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा देता है। यह व्यक्तियों को हिंसा, घृणा और अन्याय के खिलाफ खड़े होने और सही मार्ग पर चलने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह आतंकवाद जैसे गलत रस्तों को छोड़ने की प्रेरणा दे सकता है।बकरीद के दौरान सामूहिक समाज और उत्सव समुदाय को एकजुट करते हैं। यह सामाजिक एकता आतंकवाद के खिलाफ एक मजबूत ढाल बन सकती है, क्योंकि आतंकवाद अक्सर सामुदायिक विभाजन का पर्यवस उत्पत्ता है।एकजुट समाज आतंकवाद के प्रभाव को कम करने में सक्षम होता है।बकरीद का संदेश मानवता की सेवा और दूसरों के प्रति दया पर जोर देता है। यह लोगों को हिंसक विचारधाराओं से दूर रहने और समाज में सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रेरित करता है, जो आतंकवाद के खिलाफ एक वैचारिक और नैतिक जवाब है।बकरीद का त्योहार शांति, एकता, करुणा और नैतिकता के मूल्यों के माध्यम से आतंकवाद से लड़ने की प्रेरणा देता है।

आपका पत्र मिला

जीत का जश्न नहीं, मातम का जख्म

वर्तमान परिदृश्य पल में तौला पल में माशा सिद्ध हो रहा ! खेल प्रेमियों और सभी के लिए यह जश्न जीवन भर के लिए मातम के इतने गहरे जख्म दे गया कि जीवन भर आंसुओं के बीच कराहना ही रहेगा ! कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु में क्रिकेट स्टेडियम के बाहर भगदड़ के दौरान 11 लोगों का जीवन संतुलन भूमि से हमेशा हमेशा के लिए चला गया ! क्या गुजर रही होंगी उन परिजनों पर जिन्होंने अपने चिराग घर के आधार स्तम्भ को काल के गाल में समाते देखा ! चिन्नास्वामी स्टेडियम में 40 हजार की क्षमता और 3 लाख लोगों की भीड़, हालात का बेकाबू होना स्वाभाविक है, परन्तु कारगर रणनीति और पुख्ता व्यवस्था का अभाव क्यों...? बताया जा रहा है स्टेडियम के बाहर नाले

के पास एक स्लेब रखा था जिसके ढहने से अफरा तफरी मची, खर पहलु कुछ भी हो ! समुचित ठोस व्यवस्था और कुशल नेतृत्व के अभाव की आहत सुनाई देती है ! अब ये कैसा जश्न ? आखिर इन मौतों का जिम्मेदार कौन है ? मुवावजा कुछ हद तक आर्थिक संबल जरूर दे देता है परन्तु जो अनमोल जीवन हमेशा हमेशा के लिए गया उसकी क्या क्षति पूर्ति ? खेल की जीत की खुशी में 11 लोगों के जीवन का खेल खत्म होगा, यह तो किसी ने सोचा भी नहीं होगा ! कुछ भी हो आने वाले समय में ऐसे मातम भरे हादसों का जन्म न हो, इस पर गहन चिंतन मनन की जरूरत है ! कुशल नेतृत्व और समुचित बिदुओं पर पुख्ता व्यवस्था को प्रबल बनाने की

जरूरत होनी चाहिए ताकि खुशियों भरा माहौल, आंसुओं और मातम तक न सिमट जाए ! जश्न, जश्न रहे.. मातम का जख्म न बने।
योगेश जोशी
वाया ई-मेल

इस पेज पर प्रकाशित लेखकों के विचार निजी हैं। समाचार पत्र से इनका कोई लेना-देना नहीं है। आपके विचार व सुझाव भी आमंत्रित हैं। संपादक,
स्वतंत्र भारत
1, जॉपलिंग रोड,
लखनऊ-226001
E-mail : swatantrab-harat77@gmail.com

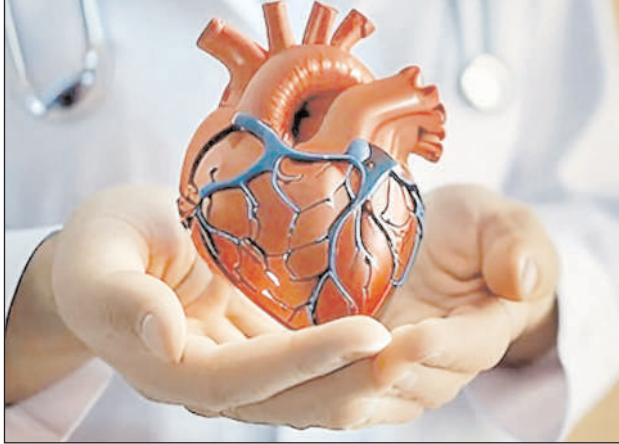
हार्ट को रखना है हेल्दी तो डॉग से करें दोस्ती



अगर आपके पास पालतू जानवर के रूप में डॉग है तो यह किसी खुशखबरी की तरह है, क्योंकि एक स्टडी में सामने आया है कि डॉग के कारण दिल को सेहतमंद बनाए रखने में मदद मिलती है। अब हाल ही में अमेरिका में हुई एक रिसर्च में सामने आया है कि अगर आपके पास पालतू जानवर के रूप में डॉग है तो इससे दिल को सेहतमंद बनाए रखने में मदद मिलती है।

कई स्टडीज में सामने आ चुका है कि पालतू जानवर का होना व्यक्ति की सेहत को कई तरह से फायदा पहुंचा सकता है। अब हाल ही में अमेरिका में हुई एक रिसर्च में सामने आया है कि अगर आपके पास पालतू जानवर के रूप में डॉग है तो इससे दिल को सेहतमंद बनाए रखने में मदद मिलती है।

में प्रकाशित स्टडी के लिए शोधकर्ताओं ने 1,769 लोगों पर रिसर्च की। इनमें से कोई भी पहले से दिल की बीमारी का मरीज नहीं था। इनमें उन लोगों को शामिल किया गया जिनके पास पेट्स थे और नहीं थे। रिसर्च के दौरान इन सभी की बाँड़ी मास इंडेक्स, डायट, फिजिकल एक्टिविटी, स्मोकिंग स्टेटस, ब्लड प्रेशर, ब्लड ग्लूकोज और कलेस्ट्रॉल के पॉइंट्स पर मार्किंग दी गई। शोधकर्ताओं ने इसके बाद स्टडी में शामिल पेट ओनर्स की कार्डियोवस्कुलर हेल्थ की तुलना उन लोगों से की जिनके पास



पालतू जानवर नहीं थे। इस दौरान सामने आया कि वे लोग जिनके पास पालतू जानवर थे उनकी दिल की सेहत उन लोगों के मुकाबले ज्यादा अच्छी थी जिनके पास कोई भी पेट नहीं था। खासतौर से ऐसे लोग जिनके पास पेट के रूप में डॉग था उनका दिल ज्यादा सेहतमंद पाया गया। इसके पीछे की वजह यह मानी जा रही है कि डॉग्स अन्य पालतू जानवरों के मुकाबले ज्यादा फिजिकली एक्टिव होते हैं जिससे उनके ओनर्स भी एक्टिव बने रहते हैं, यह उनकी दिल की सेहत को बनाए रखने में मदद करता है।

जानिए पर्सनैलिटी के मुताबिक कैसे चुनें अपना डॉगी

स्टडी के मुताबिक, डॉग के कारण मेंटल स्ट्रेस कम करने और समाज में घुलने-मिलने की समस्या भी दूर होती है। ये फैक्टर्स दिल की सेहत को भी प्रभावित करते हैं। इनमें पॉजिटिव चेंज हार्ट के लिए काफी अच्छा साबित हुआ है।

डायरिया से जुड़ी इन बातों को कहीं सच तो नहीं मानते



डायरिया एक आम स्वास्थ्य समस्या है, जिससे लगभग हर व्यक्ति अपने जीवन में कभी न कभी जूझा होता है। डायरिया खासकर गर्मियों और बरसात के मौसम में ज्यादा देखने को मिलती है। अगर समय पर ध्यान न दिया जाए, तो यह डिहाइड्रेशन का कारण बन सकता है, जो बच्चों और बुजुर्गों के लिए जानलेवा साबित हो सकता है। यह आमतौर पर दूषित भोजन या दूषित पानी से फैलता है। इसके लक्षणों में पेट दर्द, ऐंठन, उल्टी और बुखार भी शामिल हो सकते हैं। डायरिया को लेकर हमारे समाज में कई गलत धारणाएं फैली हुई हैं, जिन्हें लोग अक्सर सच मान लेते हैं। आइए इस लेख में हम यहां चार आम मिथकों और उनकी हकीकत को समझते हैं, ताकि आप इस स्थिति से सही तरीके से निपट सकें।

मिथक 1: डायरिया में नमक नुकसान करता है- कुछ लोग सोचते हैं कि डायरिया के दौरान नमक का सेवन हानिकारक होता है। यह पूरी तरह गलत है। डायरिया में शरीर से पानी और इलेक्ट्रोलाइट्स (जैसे सोडियम) की हानि होती है। इसकी पूर्ति के लिए ओआरएस (ओरल रिहाइड्रेशन सॉल्यूशन), जिसमें नमक और चीनी का मिश्रण होता है, पीना जरूरी है। ओआरएस डिहाइड्रेशन को रोकने में मदद करता है और शरीर को आवश्यक खनिज प्रदान करता है।

मिथक 2: डायरिया कभी गंभीर नहीं होता- कई लोग मानते हैं कि डायरिया सामान्य समस्या है और यह अपने आप ठीक हो जाती है। हकीकत यह है कि डायरिया गंभीर हो सकता है, खासकर बच्चों और बुजुर्गों में। यदि डायरिया लंबे समय तक रहे या बार-बार दस्त हों, तो यह डिहाइड्रेशन का कारण बन सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, डायरिया बच्चों में मृत्यु का एक प्रमुख कारण है। गंभीर मामलों में तुरंत चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।

मिथक 3: डायरिया में सिर्फ सूखा खाना खाना चाहिए- यह धारणा भी गलत है कि डायरिया में केवल सूखा खाना, जैसे खिचड़ी या टोस्ट, ही खाना चाहिए। हकीकत में, डायरिया के दौरान हल्का और संतुलित आहार जरूरी है। केला, चावल, सेब की चटनी और टोस्ट (BRAT डाइट) फायदेमंद हैं, साथ ही नारियल पानी, दाल का पानी और हल्का सूप भी पोषण और हाइड्रेशन बनाए रखने में मदद करते हैं। डायरिया में भारी और तैलीय भोजन से बचना चाहिए।

मिथक 4: घर के खाने से डायरिया नहीं हो सकता कई लोग मानते हैं कि घर का खाना हमेशा सुरक्षित होता है और इससे डायरिया नहीं हो सकता। यह सच नहीं है। यदि खाना सही तरीके से न पकाया जाए, बर्तन गंदे हों, या खाना महक गया हो, तो बैक्टीरिया या वायरस के कारण डायरिया हो सकता है। रसोई में स्वच्छता, ताजा सामग्री और सही भंडारण जरूरी है। दूषित पानी या कच्चे खाद्य पदार्थ भी डायरिया का कारण बन सकते हैं।

क्या करें डायरिया में? डायरिया होने पर पर्याप्त मात्रा में पानी और ओआरएस पिएं। हल्का और सुपाच्य भोजन लें। स्वच्छता का ध्यान रखें, जैसे बार-बार हाथ धोना। यदि दस्त अधिक समय तक रहे, तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

बासी मुंह चबाएं करी पते, सेहत को मिलेंगे कई फायदे

कड़ी पता भारतीय भोजन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उपयोग अक्सर खाने के स्वाद को बढ़ाने के लिए किया जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि कड़ी पते के सेवन से आपकी सेहत पर भी कई अद्भुत लाभ हो सकते हैं? अगर आप बासी मुंह लगातार 15 दिनों तक कड़ी पते को खाते हैं, तो इसके आपके शरीर पर कई सकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं। आइए जानते हैं इसके बेमिसाल फायदे। कड़ी पते में मौजूद कई पोषक तत्व जैसे विटामिन ए, एंटीऑक्सीडेंट्स और फ्लेवोनॉयड्स आपको रोगप्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करने में मदद करते हैं। लगातार कड़ी पते का सेवन करने से आपके शरीर की प्रतिरक्षा क्षमता में वृद्धि होती है, जिससे बीमारियों से लड़ने में मदद मिलती है। कड़ी पते का सेवन पाचन तंत्र के लिए भी लाभकारी होता है। इसमें फाइबर की उच्च मात्रा होती है, जो पाचन प्रक्रिया को सुचारु बनाती है। इससे गैस्ट्रिक समस्याओं, कब्ज और अपच की समस्याओं में राहत मिलती है। बासी मुंह कड़ी पते को चबाने से पाचन तंत्र को बेहतर बनाया जा सकता है। कड़ी पते का सेवन वजन नियंत्रण में भी मददगार साबित हो सकता है। यह शरीर के मेटाबोलिज्म को बढ़ाता है और शरीर की चर्बी को कम करने में सहायता करता है। नियमित रूप से कड़ी पते का सेवन करने से आप आसानी से अपने वजन को नियंत्रित कर सकते हैं। कड़ी पते में एंटीऑक्सीडेंट्स और विटामिन ए मौजूद होते हैं, जो त्वचा की सेहत के लिए लाभकारी हैं। यह त्वचा को निखारने, मुहांसों और उम्र बढ़ने के लक्षणों को कम करने में मदद करता है। बासी मुंह कड़ी पते को चबाने से आपकी त्वचा में चमक और ताजगी आ सकती है।

शरीर में है विटामिन बी-12 की कमी? डाइट में शामिल करें ये चीजें



विटामिन बी-12 हमारे शरीर के लिए सबसे महत्वपूर्ण पोषक तत्वों में से एक है, जो लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण और तंत्रिका तंत्र के स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी कमी से थकान, कमजोरी, भूलने की बीमारी, और गंभीर मामलों में एनीमिया जैसी समस्याएं हो सकती हैं। कई लोग विटामिन बी-12 की कमी को पूरा करने के लिए सप्लीमेंट का सहारा लेते हैं, लेकिन संतुलित आहार के जरिए इसकी पूर्ति संभव है। केला, चना, अंडे और डेयरी उत्पाद जैसे खाद्य पदार्थ विटामिन बी-12 की कमी को प्राकृतिक रूप से दूर करने में मददगार हैं। आइए जानें इनके फायदे और इन्हें डाइट में कैसे शामिल करें।

विटामिन बी-12 का महत्व विटामिन बी-12, जिसे कोबालमिन भी कहा जाता है, मुख्य रूप से पशु-आधारित खाद्य पदार्थों में पाया जाता है। शाकाहारी लोगों में इसकी कमी की संभावना अधिक होती है, क्योंकि पौधों में यह स्वाभाविक रूप से कम होता है। इसकी कमी से थकान, कमजोरी, सुन्न होना, चलने में परेशानी, मतली आने, वजन कम होना, चिड़चिड़ापन, और एकाग्रता में कमी जैसी समस्याएं हो सकती हैं। गर्भवती महिलाओं और बुजुर्गों में इसकी कमी गंभीर हो सकती है। ऐसे डाइट में विटामिन बी-12 युक्त खाद्य पदार्थ शामिल करना आपके लिए बेहद फायदेमंद हो सकता है।

चना प्रोटीन और फाइबर का उत्कृष्ट स्रोत है। कुछ अध्ययनों के अनुसार, किण्वित (फर्मेंटेड) चने में विटामिन बी-12 की मात्रा बढ़ सकती है। शाकाहारी लोग धुना हुआ चना, चने की सब्जी या चने का सूप अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं। यह पाचन को बेहतर बनाता है और विटामिन बी-12 की कमी को पूरा करने में सहायता करता है।

3. अंडे अंडे विटामिन बी-12 का शानदार स्रोत हैं। एक अंडे में लगभग 0.6 माइक्रोग्राम विटामिन बी-12 होता है, जो दैनिक आवश्यकता का हिस्सा पूरा करता है। उबले अंडे, आमलेट या स्क्रैम्बल्ड एग्स को नाश्ते में शामिल करें। अंडे प्रोटीन और अन्य पोषक तत्वों से भी भरपूर होते हैं, जो समग्र स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं।

4. डेयरी उत्पाद दूध, दही, पनीर और छाछ जैसे डेयरी उत्पाद विटामिन बी-12 का प्राकृतिक स्रोत हैं। एक गिलास दूध में लगभग 1.2 माइक्रोग्राम विटामिन बी-12 होता है। शाकाहारी लोग रोजाना दूध या दही का सेवन कर सकते हैं। पनीर सलाद या सब्जियों के साथ भी लिया जा सकता है। डेयरी उत्पाद हड्डियों और तंत्रिका तंत्र को मजबूत करते हैं।

कैसे करें डाइट में शामिल? सुबह के नाश्ते में उबले अंडे या दही के साथ केला खाएं। दोपहर में चने की सब्जी या सलाद और रात में एक गिलास दूध पिएं। शाकाहारी लोग किण्वित चने या दही पर अधिक ध्यान दें।

सेहत

इन घरेलू उपायों से जोड़ों के दर्द से मिलेगा जल्द आराम



आर्थराइटिस, जिसे जोड़ों का दर्द या गठिया भी कहा जाता है, एक ऐसी स्थिति है जो जोड़ों में सूजन और दर्द का कारण बनती है। यह समस्या खासकर अधिक उम्र के लोगों और कभी-कभी युवाओं में भी देखी जाती है। आर्थराइटिस होने के कई कारण हो सकते हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख कारण की बात की जाए तो जोड़ों पर अत्यधिक दबाव, चोट, ऑटोइम्यून विकार, और खराब जीवनशैली शामिल हैं। आर्थराइटिस की समस्या के कारण चलना-उठना और जीवन के सामान्य कार्यों को करना भी मुश्किल हो जाता है। इसके कुछ लक्षण की अगर बात की जाए तो जोड़ों में दर्द, सूजन, अकड़न, और गतिशीलता में कमी हो सकती है। कई बार जोड़ों में दर्द और अकड़न के कारण उठने-बैठने, चलने-फिरने में परेशानी होती है। वैसे तो डॉक्टर से संपर्क करके सही उपचार करना जरूरी है, लेकिन लेकिन कुछ घरेलू उपाय आर्थराइटिस के दर्द को कम करने में मदद कर सकते हैं। आइए जानें कुछ प्रभावी घरेलू उपाय जो जोड़ों के दर्द से राहत दिला सकते हैं।

- हल्दी और दूध** हल्दी में मौजूद करक्यूमिन में एंटी इन्फ्लेमेटरी और दर्द निवारक गुण होता है। एक गिलास गर्म दूध में आधा चम्मच हल्दी मिलाकर रात को सोने से पहले पिएं। यह जोड़ों की सूजन और दर्द को कम करता है। नियमित सेवन से आर्थराइटिस के लक्षणों में सुधार हो सकता है।
- गर्म और ठंडी सिकाई** जोड़ों के दर्द में गर्म और ठंडी सिकाई बहुत प्रभावी है। गर्म सिकाई मांसपेशियों को आराम देती है और अकड़न कम करती है, जबकि ठंडी सिकाई सूजन को नियंत्रित करती है। 15 मिनट तक गर्म पानी की बातल से सिकाई करें, फिर 10 मिनट तक बर्फ की थैली का उपयोग करें। इसे दिन में दो बार करें। आर्थराइटिस के रोगियों को डॉक्टर की सलाह पर ही नियमित रूप से इस उपाय को प्रयोग में लाना चाहिए।
- नियमित व्यायाम और मालिश** हल्का व्यायाम, जैसे योग, तैराकी या पैदल चलना, जोड़ों को लचीला बनाता है। ताइसन और भुंजासन जैसे योगासन विशेष रूप से लाभकारी हैं। साथ ही, नारियल या सरसों के तेल से जोड़ों की मालिश करें। तेल में लहसुन या अदरक का रस मिलाने से और लाभ मिलता है। मालिश रक्त संचार को बढ़ाती है और दर्द से राहत देती है।
- 4. ओमेगा-3 युक्त आहार** अलसी के बीज, अखरोट और मछली जैसे ओमेगा-3 युक्त खाद्य पदार्थ जोड़ों की सूजन को कम करते हैं। शाकाहारी लोग अलसी का तेल या बीज अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं। इसके अलावा, हरी सब्जियां और फल भी पोषण प्रदान करते हैं।

ध्यान रखें अगर आपकी समस्या गंभीर है तो डॉक्टर के सलाह पर ही इन घरेलू उपायों का पालन करें।

ब्लड प्रेशर को नैचुरली कम करने के तरीके



हाई ब्लड प्रेशर एक गंभीर समस्या है, जिसमें आर्टरी वॉल्स पर रक्त का दबाव बहुत अधिक हो जाता है और ब्लड पंप करने के लिए दिल को अधिक मेहनत करनी पड़ती है। अगर इसे कंट्रोल न किया जाए तो यह कई गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है, जैसे कि हार्ट अटैक, स्ट्रोक और किडनी की बीमारी।

बीपी मरीजों को ब्लड प्रेशर को कंट्रोल में रखने के लिए नियमित व्यायाम, संतुलित आहार, पर्याप्त नींद, और स्ट्रेस मैनेजमेंट करने की सलाह दी जाती है। खासकर, अगर डाइट सही नहीं है और आप उटप्टांग चीजों का सेवन करते हैं तो इससे बड़ी हुई बीपी और भी अधिक हो सकती है।

अगर आप ऐसे सुपरफूड्स की तलाश में हैं जो ब्लड प्रेशर को आसानी से कंट्रोल कर सकें तो आप सही जगह पर हैं क्योंकि इस आर्टिकल में आपको 5 ऐसे सुपरफूड्स के बारे में जानकारी

मिलेगी, जो बीपी को कम करने में बेहद फायदेमंद हैं। आइए जानते हैं इनके बारे में।

बीपी को कम करने के लिए क्या खाएं?

केला- अगर आपका बीपी बढ़ा हुआ है तो केले का सेवन करना एक अच्छा विकल्प साबित हो सकता है। क्योंकि इसमें पोटेशियम की मात्रा अधिक होती है जो किडनी से अतिरिक्त सोडियम को बाहर निकालने में मदद करके रक्तचाप को कम करने में सहायता करता है।

डार्क चॉकलेट

अगर आपको चॉकलेट पसंद है तो आपके लिए अच्छी खबर है, आप इसके जरिए भी ब्लड प्रेशर को घटा सकते हैं। लेकिन आपको इसके लिए डार्क चॉकलेट खानी होगी। यह मैग्नीशियम और फ्लेवोनॉयड्स से भरपूर होता है जो नाइट्रस ऑक्साइड के उत्पादन को बढ़ाकर रक्तचाप को कम करता है।

चुकंदर- चुकंदर एक सुपरफूड है जो ब्लड प्रेशर को भी कम करने में मदद कर सकता है। यह अपने कार्बनिक नाइट्रेट के कारण हाई बीपी में सुधार कर सकता है, जिसे शरीर नाइट्रस ऑक्साइड में परिवर्तित करता है।



ये सुपरफूड्स नैजेज करेंगे बीपी

बुढ़ापे तक लीवर को जवां रखने का काम करती हैं ये चीजें

हमारे शरीर में कई अंग दिन-रात काम करते हैं लेकिन लीवर (यकृत) वह मीन योद्धा है जो बिना शोर किए, हर पल हमें स्वस्थ रखने में लगा रहता है। यह न सिर्फ पाचन में मदद करता है बल्कि खून को साफ करने, विषैले तत्वों को बाहर निकालने, दवाओं को प्रोसेस करने और शरीर में पोषक तत्वों का संतुलन बनाए रखने जैसे सैकड़ों जरूरी काम करता है। जीवनशैली की छोटी-छोटी लापरवाहियां इस नाजुक अंग को धीरे-धीरे नुकसान पहुंचा सकती हैं और जब तक इसके लक्षण सामने आते हैं, तब तक काफी देर हो चुकी होती है इसलिए जरूरी है कि हम लीवर की देखभाल को गंभीरता से लें। सही खानपान, फिजिकल एक्टिविटी और समय-समय पर जांच से ही इस जरूरी अंग को उम्र भर स्वस्थ रखा जा सकता है। भारत में हर 5 में से 1 व्यक्ति लीवर की समस्या से ग्रस्त है। लीवर से

मैदा चीनी और ज्यादा नमक लेकिन कुछ फूड्स आपके लीवर के लिए बहुत ज्यादा फायदेमंद हैं। चुंकंदर का जूस, सलाद जरूर खाएं। **ब्रोकोली:** ब्रोकोली इतनी फायदेमंद है कि ये आपके लीवर को डेमेज होने से बचाती है। फेटी लीवर से बचाती है। इसके अलावा आप केल,पालक और साग भी जरूर खाएं क्योंकि हरी पत्तेदार सब्जियां लीवर को डिटॉक्स करती हैं। चुकंदर और ब्रोकोली, ये दो

चीजें तो रूटीन में अपनी डाइट में शामिल रखें।

- हरी पत्तेदार सब्जियां-** जैसे पालक, मेथी, ब्रोकोली, सरसों का साग - ये लीवर से टॉक्सिन्स निकालने में मदद करती हैं। इनमें क्लोरोफिल होता है जो लीवर की सफाई करता है।
- अखरोट-** ओमेगा-3 फेटी एसिड्स और ग्लूटाथियोन से भरपूर - लीवर की सफाई में सहायक। खासकर फेटी लीवर की स्थिति में लाभदायक।
- ग्रीन टी-** इसमें एंटीऑक्सीडेंट (कैटेचिन) होता है जो लीवर को फ्री रेडिकल्स से बचाता है। लीवर फैट कम करने में मदद करता है।
- सिट्रस फल -** जैसे नींबू, संतरा, मौसंबी - विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर। शरीर से टॉक्सिन्स बाहर निकालने में सहायक।
- सेब -** इसमें पेक्टिन होता है जो पाचन को बेहतर करता है और लीवर पर बोझ कम करता है। कोलेस्ट्रॉल को भी नियंत्रित करता है।

 मेघ : अतिथि समागम बना रहेगा। कानूनी मामलों में क्लिंब से सफल मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा। शैक्षिक विकास होगा।	 तुला : आप अपने संयम के कारण सफल होंगे। आगंतुकों के स्वागत सत्कार में कचि रहेगी। हाथ-पैर में पीड़ा हो सकती है। कावों में क्लिम्ब होगा।
 वृष : नवीन जनसम्पर्क बढ़ेगा। इष्ट मित्रों का सहयोग मिलेगा। धार्मिक कार्य में विशेष रुचि रहेगी। वैचारिक प्रखरता बनी रहेगी।	 वृश्चिक : संबंधों में निकटता आएगी। किसी कार्य के सम्पन्न होने प्रभाव में वृद्धि होगी।
 मिथुन : शिक्षा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। आर्थिक एवं सामाजिक पक्ष मजबूत होंगे।	 धनु : सामाजिक कार्य में सफलता मिलेगी। व्यवसायिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।
 कर्क : परिवार का सहयोग मिलेगा। यात्रा एवं देशांतर की स्थिति सुखद होगी।	 मकर : सतान के दायित्व को पूर्ति होगी। व्यवसायिक योजना को बल मिलेगा।
 सिंह : निजी संबंध प्रगाण होंगे। जीवन के क्षेत्र में प्राप्ति होगी। सम्मान में वृद्धि होगी।	 कुंभ : संबंधों में निकटता आएगी। जीवन साथी का सहयोग मिलेगा। आय-व्यय में संतुलन बनाएं।
 कन्या : व्यवसायिक योजना को बल मिलेगा। संबंधों में निकटता आएगी। जीवन साथी का सहयोग मिलेगा।	 मीन : पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। संबंधों में प्रगाणता आएगी। आर्थिक मामलों में जोखिम से बचें।

आधा दर्जन दुकानों से धान के नमूने भरे जांच टीम ने



जालौन। खरीफ बुवाई सीजन को देखते हुए किसानों को उत्तम गुणवत्ता वाले बीज उपलब्ध कराने और कृषि उत्पादों की गुणवत्ता की निगरानी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रशासन ने सघन अभियान चलाया। लगभग आधा दर्जन दुकानों से धान के नमूने लिए गए। टीम ने बीज व कीटनाशक की दुकानों का निरीक्षण किया। आधा दर्जन दुकानों में किए गए निरीक्षण कि दौरान धान के बीजों की लगभग 10 विभिन्न किस्मों के नमूने संग्रहित किए। एसडीएम विनय भौर्य ने जानकारी दी कि सभी नमूनों को राजकीय प्रयोगशाला भेजा गया है, जहां उनकी गुणवत्ता, अंकुरण दर और प्रसंस्करण मानकों की वैज्ञानिक जांच की जाएगी। उन्होंने स्पष्ट किया कि मानक से कमतर गुणवत्ता मिलने पर संबंधित विक्रेता और आपूर्तिकर्ता के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने बीज पैकेटों पर अंकित विवरण, जैसे उत्पादन व समाप्ति तिथि, बिक्री मूल्य और भंडारण स्थिति का बारीकी से अवलोकन किया। साथ ही, दुकानों पर उपलब्ध कृषि रसायनों कीटनाशक, उर्वरक, फफूंदनाशक आदि की एक्सपायरी डेट, गुणवत्ता और लाइसेंस वैधता की भी जांच की गई। एसडीएम ने व्यापारियों को निर्देशित किया कि वे केवल प्रमाणित व गुणवत्ता युक्त उत्पादों की ही बिक्री करें। उन्होंने चेतावनी दी कि एक्सपायर्ड या मिलावटी उत्पादों की बिक्री पर कठोर कार्रवाई की जाएगी।

गंगा दशहरा पर पंचनद संगम में हजारों श्रद्धालुओं ने लगाई आस्था की डुबकी

रामपुरा(जालौन)। जेट माह के गंगा दशहरा अवसर पर जनपद जालौन स्थित प्रसिद्ध पंचनद संगम के पवित्र जल में हजारों श्रद्धालुओं ने श्रद्धा की डुबकी लगाकर स्नान किया । जनपद जालौन की सीमा में स्थित पांच नदियों का संगम स्थल पंचनद जनपद जालौन सहित आसपास के जिलों में निवास करने वाले लाखों लोगों की श्रद्धा व आस्था का केंद्र है। यहां कार्तिक पूर्णिमा पर स्नान का पौराणिक व धार्मिक महत्व है इसके अतिरिक्त तमाम छोटे बड़े त्योहार पर भी लोग यहां स्नान करने के लिए आते रहते हैं। प्रतिवर्ष गंगा दशहरा के अवसर पर भी यहां चार-पांच सैकड़ या इससे भी कम संख्या में श्रद्धालु स्नान करने आते थे लेकिन इस वर्ष श्रद्धालुओं की संख्या में अकल्पनीय इजाफा हुआ और सुबह ३बजे से शाम 2बजे तक लगभग 4-5 हजार श्रद्धालुओं ने स्नान किया। पूर्व वर्षों में स्नान करने वालों की कम संख्या की जानकारी होने बावजूद क्षेत्राधिकारी



माधौगढ़ रामसिंह के निर्देशानुसार बेहतर सुरक्षा व्यवस्था की गई थी। स्नान करने वालों की बढ़ी हुई संख्या को देखते हुए थाना प्रभारी रामपुरा इंस्पेक्टर रजत कुमार सिंह , एसएसआई सत्यपाल सिंह यादव, चौकी प्रभारी जयमनपुर उप

निरीक्षक अटल बिहारी ,उप निरीक्षक रमाशंकर सिंह ने भारी पुलिस बल के साथ मौजूद रहकर मुस्ती से ड्यूटी कर सुरक्षा व्यवस्था को अंजाम दिया। पंचनद स्नान घाट पर उप जिलाधिकारी माधौगढ़ मनोज कुमार सिंह,

तहसीलदार भुवनेश कुमार ने पहुंचकर स्नान घाट की प्रबंधों को देखा। उप जिलाधिकारी ने लेखपाल शशांक सोनी आदि राजस्व कर्मियों को और बेहतर व्यवस्था बनाने हेतु निर्देशित किया।



पंचनद संगम तट पर एक पेड़ मां के नाम से हुआ वृक्षारोपण

रामपुरा(जालौन)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी जालौन के द्वारा एक पेड़ मां के नाम, से वृक्षारोपण की चलाई गई मुहिम के आभार पर उप जिलाधिकारी माधौगढ़ के नेतृत्व में पंचनद संगम तट पर वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम संपन्न हुआ जिसमें क्षेत्रीय लोगों एवं विद्यालय के बच्चों में बड़-चढ़कर हिस्सा लिया। उप जिलाधिकारी माधौगढ़ मनोज कुमार सिंह के नेतृत्व में राजस्व विभाग माधौगढ़ का बड़ा अमला एवं वन विभाग के कर्मचारी, क्षेत्रीय सामाजिक लोग तथा राजकीय बालिका इंटर कॉलेज जगमनपुर के बच्चों ने पंचनद संगम तीर्थ पर पहुंचकर विभिन्न प्रजातियां के लगभग आधा सैकड़ वृक्ष रोपित किये। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी मनोज कुमार सिंह ने कहा कि वृक्ष हमारे जीवन का आधार है ,जब तक पृथ्वी पर वृक्ष हैं तभी तक मानव जीवन है। इनसे मिलने वाली शुद्ध वायु, ग्रीष्मकाल की भीषण तपन में शीतल छाया एवं नदियों के तटों की कटान रोकने का वृक्ष प्राकृतिक उपाय है। उप जिलाधिकारी ने उपस्थित लोगों से वृक्षारोपण करने एवं उनको पूर्ण आकार लेने तक संरक्षित करने का आवाहन किया। इस अवसर पर प्रभारी तहसीलदार भुवनेश, रामपुरा थाना प्रभारी इंस्पेक्टर रजत कुमार सिंह ,वरिष्ठ उप निरीक्षक सत्यपाल सिंह यादव,लेखपाल शशांक सोनी, विजय द्विवेदी, राजकीय इंटर कॉलेज की प्रधानाचार्या हेमलता गौतम,लक्ष्मण राठौर, राम सजीवन अवस्थी, भूपेंद्र ओझा, योगेश शाव्यवार, वन विभाग से अनेक वनरक्षक सहित तमाम क्षेत्रीय लोग उपस्थित रहे।

जनपद में जल्द दूर होगा जल संकट, हर घर तक पहुंचेगा स्वच्छ पेयजल

ललितपुर। जनपद में बड़ रहे जल संकट और विभिन्न माध्यमों से प्राप्त हो रही जल आपूर्ति संबंधी शिकायतों का संज्ञान लेकर जिलाधिकारी अश्वय त्रिपाठी ने जल निगम, जल संस्थान, नगर पालिका और मीडिया प्रतिनिधियों के साथ कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक कर निर्देश दिए कि घर-घर तक स्वच्छ जल पहुंचाना हमारी जिम्मेदारी है व किसी भी स्तर पर जलापूर्ति बाधित नहीं होनी चाहिए, इसके लिए अतिरिक्त अधिकारियों, कर्मचारियों की इश्यूटी लगाकर जल आपूर्ति सुनिश्चित कराने के कड़े निर्देश दिये व उन्होंने जल निगम की अमृत 1 और अमृत 2 योजना के कार्यों में अनावश्यक विलंब होने पर अधिशासी अभियंता को पटकार लगाते हुए कहा कि कार्य में बाधा डालने वाले ठेकेदारों को ब्लैक लिस्टेड कर अवगत कराएँ व जल निगम के अधिकारी अधिकतर बैठकों में प्रतिभाग नहीं करते, यह स्थिति खेदजनक है, वह स्थिति में सुधार करें अन्यथा विभागीय कार्यवाही हेतु शासन को पत्र लिखा जाएगा, उन्होंने अपर जिलाधिकारी को निर्देश दिए कि मजिस्ट्रेट की इश्यूटी लगाकर कंट्रोल रूम में पिछले 15 दिनों की पेयजल संबंधी शिकायतों का सत्यापन कराएँ व जल संस्थान की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि आज शाम से ही जल संस्थान के प्लांटों पर हो रही विद्युत आपूर्ति और उसके सापेक्ष की जा रही पेयजल आपूर्ति की रिपोर्ट करें व वह स्वयं इसकी निगरानी करें। इस अवसर के अधीक्षण अधिन्यायों की भी दूरभाष पर निदेश दिये गए। मीडिया प्रतिनिधियों ने अवगत कराया कि जल संस्थान के कर्मचारी पाइप के वाल्व को पूरी क्षमता से नहीं खोलते और कोई समय भी निर्धारित नहीं है। जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियंता जल संस्थान को निर्देश दिये कि सभी सहव्यक्त अभियन्ताओं की इश्यूटी लगाकर निर्धारित समय पर पूरी क्षमता के साथ वॉल्व खुलवाये जायें, ताकि अंतिम छेर तक पानी पहुंच सके व टैंकरो से जलापूर्ति की समीक्षा में बताया गया कि शहर में 11 ट्रेक्टरों के माध्यम से प्रतिदिन 150 चक्र लगाये जा रहे हैं, इसी दौरान टैंकरो से गंदे पानी आने की शिकायत की गई, जिलाधिकारी ने अधिशासी अधिकारी नगर पालिका को निर्देशित किया कि स्वास्थ्य नायकों की इश्यूटी लगाकर टैंकरो के माध्यम से की जा रही आपूर्ति की जांच करें कि जल स्वच्छ है या नहीं व हैण्डपम्प मरम्मत की समीक्षा अधिशासी अधिकारी ने बताया कि नगर पालिका द्वारा सर्वे कर 124 हैण्डपम्पों की सूची दी गई थी, जिन्हें ठीक करा दिया गया है। इस पर जिलाधिकारी ने अधिशासी अभियन्ता जल संस्थान को निर्देश दिये कि वह हैण्डपम्प मरम्मत की स्वयं निगरानी करें। अधिशासी अभियंता ने यह भी बताया कि जल संस्थान में उच्च क्षमता वाली 2 मोटरों का इन्स्टॉलेशन चल रहा है, जिसे जल्द से जल्द पूर्ण कराने के निर्देश दिये गए।

विश्व पर्यावरण दिवस पर जनपद में एक पेड़ मां के नाम अभियान शुरू



सहित अन्य गणमान्यजन मौजूद रहे। कार्यक्रम के तहत नून नदी के किनारे लगभग दो किलोमीटर क्षेत्र में त्रिवेणी पौधे नीम, पीपल और बरगद लगाए गए। इन पौधों को वन विभाग द्वारा उपलब्ध कराया गया, जिसे उपस्थित जनप्रतिनिधियों, ग्राम प्रधानों, वृक्ष मित्रों एवं नदी मित्रों ने उत्साहपूर्वक रोपा। विशेष रूप से

ग्राम पंचायत चंदुरा, सतोह, अमीठा, बिरगुवां, सिमरिया, कैथी, हरदोई, बरसेसी, बरहा, मुलपुरा और कोकर के प्रधानों एवं प्रतिनिधियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। इस पहल में पूर्व प्रधान उपेंद्र सिंह, नरेंद्र प्रजापति, महेंद्र कुमार गौतम, लखन सिंह पहिराह, नरेंद्र प्रताप सिंह, भारतेन्दु सिंह, राहुल उपाध्याय, नरेन्द्र

पेड़ मां के नाम' एक व्यक्तिगत जिम्मेदारी का संदेश भी है।- कार्यक्रम ने न केवल पर्यावरण संरक्षण की भावना को मजबूत किया, बल्कि समाज को यह प्रेरणा भी दी कि प्रकृति और मातृत्व दोनों की सेवा करना हमारे जीवन का अनिवार्य हिस्सा होना चाहिए।

एक पेड़ मां के नाम का नारा बुलंद, यमुना तट पर किया वृक्षारोपण



कालपी(जालौन)। गुरवार को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर जगह-जगह कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कालपी के यमुना नदी के तटवर्ती इलाकों को हरा भरा करने के लिए नगर पालिकाध्यक्ष एवं

वन क्षेत्राधिकारी को मौजूदगी में उपजिलाधिकारी के द्वारा छायादार तथा फलदार पौधों को लगाकर वृक्षारोपण किया गया। वन विभाग के तत्वाधान में एक पेड़ मां के नाम यमुना नदी कालपी के किनारे बांके बिहारी में आयोजित समारोह की अध्यक्षता करते हुए उपजिलाधिकारी सुशील कुमार सिंह ने कहा कि वर्ष 1973 से हर वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर नागरिकों को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया जाता है। नगर पालिका अध्यक्ष अरविंद यादव ने कहा कि सभी लोग एक-एक पौधा लगाकर धरती को हरा भरा करने में अपना सहयोग करें। वन क्षेत्राधिकारी संजय कुमार ने कहा कि इस वर्ष वृक्षारोपण करने के लिए पौध तैयार हो चुकी है, वन विभाग के द्वारा छायादार, फलदार एवं शोभाकार पौधों की उपलब्धता कराई जाएगी। उन्होंने धरती को हरा भरा करने का आवाहन किया। इस मौके पर अधिशासी अधिकारी अवनरीश कुमार शुक्ला, शरद तिवारी, लिपिक शिशुपाल सिंह पप्पी यादव, लिपिक सरफराज खान सहित गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

आलमपुर गौशाला का निरीक्षण किया गौसेवा आयोग के अध्यक्ष ने



ज्यादा से ज्यादा पौध लगाने की अपील की। गुरवार को मुख्य अतिथि के तौर पर पधारे उ.प्र. गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष श्याम बिहारी गुप्ता ने विश्व पर्यावरण दिवस तथा योगी आदित्यनाथ के जन्मदिन के अवसर पर नगर की आलमपुर गौशाला का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कहा कि गर्मी में गौवंशों से बचाव के उपायों को देखा तथा पानी की टेंकों, भूसा, हरा चारा की हकीकत परखी। गर्मी के मौसम को दृष्टिगत रखते हुए गौवंशों के लिए छाया के पुख्ता इंतजाम निरंतर रखें जायें। साथ ही हरे चारे की व्यवस्था की जाए तथा गौवंशों को शुद्ध पानी की व्यवस्था होनी आवश्यक है। जिसके बाद गौशाला में गौ पूजन, हवन के उपरांत उन्होंने गौशाला में ही वृक्षारोपण किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पूर्व विधायक नरेंद्र पाल सिंह यादव ने कहा कि आज विश्व पर्यावरण दिवस भी है पूरी दुनिया पर्यावरण के कठिन चुनौतियों से जूझ रही है। ये चुनौती मनुष्य द्वारा ही निर्मित चुनौती है और इसके समाधान का मार्ग भी मनुष्य को ही उठाना पड़ेगा हमें प्रकृति के साथ एक समन्वय और संवाद बनाना पड़ेगा। इस समन्वय और संवाद का नाम प्रधानमंत्री ने शक पेड़ मां के नामश दिया। नगर पालिका अध्यक्ष अरविंद यादव ने पौधा रोपित करते हुए कहा कि इनके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। जिसकी नसीहत प्रकृति समय समय पर इंसान को देती रहती है। इसके बाद उन्होंने कहा कि गोवंशों के रखरखाव के लिए पालिका के द्वारा पांच कर्मचारियों की तैनाती की गई है। समय-समय पर गौशाला का औचक निरीक्षक व्यवस्थाओं का जायजा लिया जाता है। इस मौके पर भाजपा नगर अध्यक्ष सुबोध द्विवेदी, अमित पांडेय, देवेंद्र गुप्ता, रजनी पाल, सभासद राकेश यादव, नारायन द्विवेदी, सुनील पटवा, हर्षित पुरवार, शरद तिवारी, अधिशासी अधिकारी अवनरीश कुमार शुक्ला, राजस्व निरीक्षक रामभवन सिंह, शिशुपाल सिंह यादव पप्पी, निर्माण लिपिक सरफराज खान आदि लोगों ने सहभागिता रही।

बजाज पावर प्लांट परिसर में विश्व पर्यावरण दिवस पर किया वृक्षारोपण



शुक्ला तथा बजाज परिसर के समस्त कामगार सम्मिलित हुए। मुख्य अतिथि एन. सार ने कहा कि +प्लास्टिक प्रदूषण की

समस्या से निपटने हेतु हम सभी को सामूहिक प्रयास करने होंगे, दैनिक लिए हमें अपने दैनिक जीवन में प्लास्टिक का प्रयोग कम

करते हुए, धीरे-धीरे इसे पूर्णतः समाप्त करने की दिशा में कार्य करना होगा, अब तक बजाज परिसर में लगभग साढ़े तीन लाख पौधों का वृक्षारोपण किया जा चुका है व ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग चार लाख पौधों का वितरण एवं रोपण कराया गया है, इस वर्ष लगभग अठारसी हजार पौधारोपण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जिसे चरणबद्ध रूप से पूर्ण किया जाएगा। इस अवसर पर प्रेसिडेंट मनोज मेहता एवं आलोक श्रीवास्तव ने भी अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम का संचालन दीपक आनंद, उप महाप्रबंधक द्वारा किया गया। इस अवसर पर अनुराग चौबे, अमित कुमार, उदय एवं नीरज शुक्ला आदि उपस्थित रहे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर जयसुखपुर में पौधा रोपण किया ग्रामीणों ने उर्ई(जालौन)। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर कदौरा विकासखंड के ग्राम इटोरा बावनी एवं जयसुखपुर में राज्य पेयजल एवं स्वच्छता मिशन, जिला पेयजल एवं स्वच्छता समिति द्वारा एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत जल जीवन मिशन की टंकी परिसर में ग्राम पेयजल एवं स्वच्छता समिति, पानी पंखण से जुड़े महिलाओं, पुरुषों ने वृक्षारोपण किया। इस दौरान उन्होंने वृक्षों को संरक्षित करने और पेड़ों को बचाने का संकल्प लिया। जलप्रहरी राजकुमार ग्राम प्रधान इटोरा बावनी ने कहा कि वृक्ष धरा के अभिरूपा है। एक पेड़ 100 पुरों के समान है। पेड़ों को सहजने से हमारी धरा हरीभरी रहेगी, और पर्यावरण में सुधार होगा।

खबर एक नज़र

बिजली के पोल से टकराने के बाद कार खंदक में पलटी, आधा दर्जन घायल

जालौन। गंगा दशहरा पर स्नान करके लौट रही कार के चालक की झपकी लगने के कारण कार बिजली के पोल से टकराने के बाद खंदक में पलट गयी। कार पलटने के कारण कार में सवार 6 लोग घायल हो गए जिन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है जिनका उपचार चल रहा है। लहार निवासी रामजीवन ईको कार चलाता है। बुधवार की रात को वह ग्राम मेहरा बुजुर्ग थाना लहार जनपद भिण्ड मध्य प्रदेश से 6 लोगों को गंगा दशहरा स्नान कराने के लिए बिदूर घाट कानपुर ले गया था। स्नान कराकर वह वापस लौट रहा था। इसी दौरान जालौन औरइया राजमार्ग पर जगनेवा के पास अचानक कार चालक को नींद आ गयी तथा उसकी झपकी लग गयी। झपकी आते ही कार पहले मौलानी के पोल से टकरायी तथा टकराने के बाद कार सड़क किनारे खंदक में जाकर पलट गयी।कार पलटने के कारण उसमें सवार 6 लोग घायल हो गये। राहगीरों की मदद से घायलों को एम्बुलेंस में भर्ती कराया गया सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है।हालत गम्भीर होने पर राम बाबू बघेल 40 वर्ष पुत्र मुन्ना निवासी मेहरा बुजुर्ग लहार को उच्च संस्थान रिफर किया गया है। जबकि मामूली रूप से घायल मिस्टर शर्मा 60 वर्ष पुत्र राववारा, मुन्ना लाल 65 वर्ष पुत्र कल्लू, अजय 15 वर्ष पुत्र सोनू, वीर सिंह 35 वर्ष पुत्र मुन्ना लाल, रामभजन 65 वर्ष कुर्बुरपाल निवासीगंगा मेहरा बुजुर्ग थाना लहार जनपद भिण्ड मध्य प्रदेश के मामूली चोटें आने पर प्राथमिक उपचार देने के बाद चिकित्सालय से छुट्टी दे गयी है जबकि चालक बच गया है। घटना की सूचना मिलते ही उपजिलाधिकारी विनय मोर्य मौके पर पहुंच गये तथा घायलों के हालचाल लिये।

कालपी की शाही ईदगाह समेत सात मस्जिदों में सुबह 7- 8 बजे होगी बकरीद की नमाज

कालपी(जालौन)। आगामी 7 जून को ईद उल अजहा (बकरीद) की नमाज शाही ईदगाह सहित आधा दर्जन से अधिक मस्जिदों में अदा की जाएगी। शाही ईदगाह तथा खानकाह मस्जिद में सुबह पौने 8 बजे ईद उल अजहा की सामूहिक नमाज अदा की जाएगी। नमाज के दृष्टिगत रखते हुये ईदगाह में सफाई तथा धुलाई की व्यवस्था की गई है। शाही ईदगाह में ईद उल अजहा की नमाज सुबह पौने 8 बजे पेश इमाम मौलाना नजमुल हुदा की इमामत अदा कराई जायेगी। जबकि विख्यात दरगाह खानकाह शरीफ मस्जिद में भी मौलाना अशफाक अहमद बकराती ईद की नमाज सुबह पौने आठ बजे पढ़ावेंगे। इसी प्रकार मुड़िया गुम्बद मस्जिद गल्ल मंडी के सामने 7 बजे पेश इमाम हाफिज दावर रजा की इमामत में नमाज सम्पन्न होगी। लंका मीनार के पास मखदूमिया मस्जिद रावगंज में मौलाना जियाउद्दीन की इमामत में नमाज अदा कराई जायेगी। अदलसरांय स्थिति सैयद वाली मस्जिद, शुभान मस्जिद हरीगंज, खुजूर वाली मस्जिद में कारी अब्दुल समी की इमामत में नमाज अदा होगी। इसके अलावा निकटवर्ती ग्राम गुलौली की मस्जिदों में भी ईद की नमाज अदा कराई जाएगी। उपजिलाधिकारी सुशील कुमार सिंह, क्षेत्राधिकारी अवधेश कुमार सिंह, कोतवाल परमहंस तिवारी, अतिरिक्त निरीक्षक मोहम्मद अशराफ के द्वारा धर्मस्थलों के आसपास जायजा लिया गया है। वहीं पालिकाध्यक्ष अरविंद यादव तथा अधिशासी अधिकारी अवनरीश शुक्ला के द्वारा धर्मस्थलों के आसपास तथा रास्तों में सफाई एवं कलई का छिड़काव कराया जा रहा है। इंतजामिया कमेटी के सदस्यों के द्वारा शाही ईदगाह तथा मस्जिदों में सफाई, धुलाई आदि व्यवस्था को अंजाम दिया गया है। त्योहार को लेकर प्रशासन के द्वारा पुख्ता इंतजाम किये गये हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस पर एसडीएम ने वितरित किये पौधे

कोंच(जालौन)। प्रत्येक 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है जिसमें पृथ्वी को प्रदूषण मुक्त करते हुए हरा भरा बनाये रखने का संदेश दिया जाता है क्योंकि मूल अमेरिकी में कहा गया है कि हमें पृथ्वी अपने पूर्वजों से विरासत में नहीं मिलती बल्कि हम इसे अपने बच्चों से उधार लेते हैं क्योंकि पृथ्वी सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराती है यह पृथ्वी लालच की पूर्ति के लिए नहीं है। इसी हरित क्रांति का संदेश देते हुए विश्व पर्यावरण दिवस 2025 के अवसर पर उपजिलाधिकारी ज्योति सिंह ने तहसील परिसर में दिन पुरवार को बुक्षारोपण करने के उपरांत वहां पर उपस्थित अधिकार्यों एवं जन सामान्य को पौधे वितरित करते हुए हरित क्रांति का संदेश दिया इस दौरान उन्होंने लोगों के बीच अपने विचार रखते हुए कहा कि हम लोगों की ये जिम्मेदारी है कि इस पर्यावरण दिवस को प्लाष्टिक पॉल्यूशन मुक्त बनाए क्योंकि इस पॉल्यूशन से पृथ्वी की उर्वरता कम होती है और पृथ्वी बंजर होने लगती है यह दिन प्रकति के प्रति हमारी जिम्मेदारी को याद दिलाता है और पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक करता है इसकी शुरुआत सन 1972 में हुई थी तब से लगातार हर वर्ष 5 जून को यह दिवस मनाया जाता है इसलिए आप लोग भी पर्यावरण संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक करने का काम करें और यह कार्य एक दिन नहीं बल्कि अपनी जिम्मेदारी समझते हुए प्रत्येक दिन लोगों को पौधा रोपित करने एवं संरक्षित करने के लिए प्रेरित करें इस दौरान नायब तहसीलदार जितेंद्र सिंह वार सच अश्वय राम शरण कुशवाहा शशांक श्रीबास्तव असत कुशवाहा महेंद्र पटेल व्यापार मंडल अध्यक्ष संजय लोहिया सहित तमाम अधिकबा व आमजन नागरिक मौजूद रहे।

समाज के प्रति संवेदनशील बना रही इट्टा कार्यशाला- गौरांगी

कोंच(जालौन)। भारतीय जन नाट्य संघ इट्टा की 25वीं ग्रीष्मकालीन बाल एवं युवा नाट्य कार्यशाला में समाज में व्याप्त कुुरीतियों और बुराईयों पर अपने अभिनय से नाटक के माध्यम से प्रहार करने के लिए रंगकर्म के गुर सीखने में लगे हुए हैं। कार्यशाला में अपने विचार रखते हुए होहार रंगकर्म गौरांगी व्यास ने कहा कि यह कार्यशाला बच्चों को मंचीय अनुशासन ही नहीं सिखा रही बल्कि उन्हें समाज की समस्याओं को समझने और उस पर सोचने की दिशा दे रही है। जहां पहले हम अपनी बात रखने में झिझक थे लेकिन कार्यशाला में आकर अपनी बात रखने की हिममत आई है। कार्यशाला में अभिनय, आवाज, भावाभिव्यक्ति, शारीरिक भाषा, संवाद लेखन, नाटक की संरचना, और सामाजिक मुद्दों पर आधारित नाट्य प्रस्तुति जैसे विविध पहलुओं पर रंगकर्मियों को जानकारी दी जा रही है। रंगकर्म अनुभा पटेल ने कार्यशाला के विचार सत्र को सम्बोधित करते हुए कहा कि कला और संवाद समाज में बदलाव लाने का एक बेहद सशक्त माध्यम है। जब बच्चे समाज की कड़वी सच्चाइयों को मंच पर उतारते हैं, तो वह केवल अभिनय नहीं होता, वह परिवर्तन की शुरुआत होती है। प्रशिक्षिका साहना एवं कोमल का संयुक्त रूप से कहना है कि बच्चे केवल संवाद बोलना नहीं सीख रहे, बल्कि उन संवादों के पीछे छिपी सामाजिक सच्चाई को भी समझ रहे हैं। अंकुर राठौर एवं यूनिस खान ने कहा कि इट्टा की यह कार्यशाला पहल समाज में कला के माध्यम से चेतना जगाने की दिशा में एक प्रेरक कदम बनकर उभर रही है। कार्यशाला की शुरुआत इट्टा गीत से हुई। कार्यशाला को इट्टा अध्यक्ष अनिल कुमार वैद एवं सचिव पारसमणि अग्रवाल ने भी सम्बोधित किया।

गृहविज्ञान व शारीरिक प्रायोगिक की परीक्षा सात जून को ललितपुर। नेहरू महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर ओमप्रकाश शास्त्री ने अवगत कराया कि कुँकुसखण्ड विश्वविद्यालय डॉसी से परम्परागत विषयों की मौखिकी व प्रायोगिकी परीक्षाओं की तिथि प्राप्त हो गई है व बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर एवं छठवें सेमेस्टर गृहविज्ञान की प्रायोगिक परीक्षा 7 जून को प्रातः 9 बजे नेहरू महाविद्यालय में सम्पन्न होगी। इसके साथ ही बी.ए. छठवें सेमेस्टर शारीरिक शिक्षा विषय की प्रायोगिक परीक्षा 7 जून को प्रातः 12:30 बजे से एवं बी.ए.द्वितीय सेमेस्टर शारीरिक शिक्षा विषय की प्रायोगिक परीक्षा 8 जून को प्रातः 10 बजे से शुरू होगी। महाविद्यालय में सम्पन्न होगी। छत्र व छत्रायें अनामिका प्रसन्न प्रोजेक्ट और चार्ट पेपर फ़ाइल जस्त्र से लाएँ एवं गृहविज्ञान एवं शारीरिक शिक्षा विषय के छत्र व छत्रायें महाविद्यालय में उपस्थित होकर निर्धारित तिथि में परीक्षा दें।

न्यू ट्रांसफर मॉड्यूल पर आयोजित हुआ जागरूकता शिविर

- शिविर में कर्मचारियों को पेंशन स्कीम की दी गई जानकारीयां बांदा। गुरुवार को रेलवे स्टेशन में यु निफाइड पेंशन स्कीम ग्रुपीएस और न्यू ट्रांसफर मॉड्यूल पर जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में कर्मचारियों को यूनिफाइड पेंशन स्कीम ग्रुपीएस और न्यू ट्रांसफर मॉड्यूल के संबंध में विस्तृत जानकारीयां प्रदान की गई। मुख्यालय प्रयागराज के अदेशानुसार एवं वरिष्ठ मण्डल कार्मिक अधिकारी राजेश कुमार शर्मा के निर्देशन में गुरुवार को रेलवे स्टेशन पर एसएसई (पी0वे0), स्टेशन प्रबंधक कार्यालय, संयुक्त कू लांबी बांदा में यूनिफाइड पेंशन स्कीम ग्रुपीएस और न्यू ट्रांसफर मॉड्यूल पर जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें अलग-अलग विभाग के कुल 126 कर्मचारियों द्वारा प्रतिभागिता सुनिश्चित की गई। शिविर में उपस्थित सभी कर्मचारियों को यूनिफाइड पेंशन स्कीम पर विस्तार से जानकारी दी गई एवं ग्रुपीएस के विकल्प फार्म उपलब्ध कराए गए। कैम्प में सहायक कार्मिक अधिकारी रूपेश कुमार सुमन, सीनियर एकाउण्टेंट एसके पटेरिया एवं वेल्फेयर इंस्पेक्टर मनोज साहू, राजीव पाण्डेय, मुख्य कू नियंत्रक कमलाकांत द्विवेदी, कार्यालय अधीक्षक अनिल कुमार गुप्ता, वरिष्ठ लिपिक तीर्हट अहमद, कौशल किशोर, एसएसई पी.वे. रूपेश कुमार वर्मा उपस्थित रहे। अंत में स्टेशन प्रबंधक मनोज कुमार द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के कार्यालय परिसर में किया गया वृक्षारोपण

महोबा स विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर जनपद न्यायाधीश डॉ0 विदुषी सिंह के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया गया। वृक्षारोपण के दौरान सरिता वाधवानी अध्यक्ष स्थायी लोक अदालतएं तैद पाल अपर जिला जज एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरणएं अजय सिंह कोर्ट मैनेजरएं जनपद न्यायालयएं लीगल एड डिफेंस काउंसिल सिस्टम के चीफ रामऔतार सिंहएं एसिस्टेंट हेरन्द् मिश्रा व योगेन्द् सिंह द्वारा वृक्षारोपण किया गया। वृक्षारोपण के दौरान रन्जर वन विभागएं राजू श्रीवास सहित वन विभाग एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे। तैद पाल अपर जिला जज एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के विषय पर जागरूक करते हुये वृक्षों की आवश्यकता एवं उनके द्वारा प्रदान की जाने वाली आक्सीजन व उनके प्रभाव पर्यावरण में ग्लोबल वार्मिंग की रोकथाम कैसे की जा सकती हैंएं के सम्बन्ध में जानकारी दी गयीएं साथ ही वर्षा के सम्बन्ध में वृक्षों के योगदान के बारे में बताया गया। वृक्षों से होने वाले लाभ के विषय पर जानकारी देते हुये बताया गया कि वृक्ष न केवल आक्सीजन देते हैं बल्कि वाहनों और उद्योगों द्वारा उत्सर्जित विभिन्न हानिकारक गैसों को भी अवशोषित करते हैं। यह प्रदूषण को कम करने का एक स्वाभाविक तरीका है। अधिक वृक्ष लगाने का मतलब प्रदूषण को कम करना है। वायु प्रदूषण के अलावा वृक्ष भी ध्वनि और जल प्रदूषण को कम करने में सहायता करते हैं। यह भी कहा कि यदि पृथ्वी को रहने लायक बनाये रखना है तो ज्यादा से ज्यादा बड़े वृक्षों को लगाया जाये जैसे बरगदएं पीपलएं पाकड़ आदि।

महिलाओ व बच्चों से जुड़ी शिकायतों पर अत्यंत गंभीरता बरतने के डीएम ने दिए निर्देश

महोबा जिलाधिकारी गजल भारद्वाज की अध्यक्षता में अभियोजन की समीक्षा बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में आयोजित हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने जनपदीय पुलिस के राजपत्रित अधिकारियों शान्ता शाखा प्रभारियों के साथ अभियोजन अधिकारियों से अपराधियों के विरुद्ध प्रभावी पैरवी के सम्बन्ध में विभिन्न निर्देशों की समीक्षा की। जिलाधिकारी ने सभी उपजिलाधिकारियों को 107९16 में अपराधियों को पाबंद करने के निर्देश दिए। उन्होंने अभियोजन अधिकारी को निर्दिशित करते हुए कहा कि 15 एवं 16 जून को न्यायालय के वादों की सूची तैयार कर अपर जिलाधिकारी एवं अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा बैठक ली जाये तथा पाक्वो एक्ट के मुकदमों की सूची उपलब्ध कराएं। उन्होंने निदेशक अभियोजन को सभी न्यायालय के वादों को टेक अप कराने हेतु निर्दिशित किया। उन्होंने महिला व बच्चों से जुड़ी शिकायतों पर अत्यंत गंभीरता बरतने व अपहृताओं की बरामदगी जल्द करने के लिए निर्देश दियेएं इसके साथ ही जनपद में घटित घटनाओं एवं लॉबित विवेचनाओं की समीक्षा करते हुए गुण.दोष के आधार पर शीघ्र निस्तारा करने तथा वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी सुनिश्चित करने हेतु निर्दिशित किया तथा शक्ति अस्थस्त अपराधियों को चिन्हित कर उनकी हिस्ट्रीशीट खोलनेएं गुंज एक्टएं गैंगस्टर एक्ट एवं गैंगस्टर एक्ट की धारा 14 ; 1६ के अंतर्गत संपत्ति जब्तीकरण की कार्यवाही की समीक्षा की। बैठक में पुलिस अधीक्षक प्रबल प्रताप सिंहएं अपर पुलिस अधीक्षक वंदना सिंहएं अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व राम प्रकाशएं उपजिलाधिकारी चरझारी प्रदीप कुमारएं उपजिलाधिकारी कुलपहाड़ अनुराग प्रसादएं उपजिलाधिकारी सरदर जितेंद्र सिंहएं ज्येष्ठ अभियोजन अधिकारी सहित अभियोजन के अधिकारी तथा समस्त शाखाओं के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस पर डीएम द्वारा ग्राम सिजहरी में किया गया वृक्षारोपण

महोबा अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी गजल भारद्वाज द्वारा ग्राम सिजहरी में वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कहा की जनपद में अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जाये। उन्होंने जिला पंचायती राज अधिकारी एवं प्रभागीय वनाधिकारी को तालाब एवं खेल मैदान के किनारे 5000 पौधे लगाने के निर्देश दिए और कहा की हमें पेड़ लगाने भर नहीं हैं बल्कि उन्हें बचाना भी हैं इसलिए पेड़ों की सुरक्षा भी करनी हैंएं इसलिए जिम्मेदारी के साथ पौधारोपण करें और उनकी सुरक्षा भी करें। तत्पश्चात उन्होंने सामुदायिक शौचालयएं पब्लिक लाडब्रेरी व चंदेल कालीन मठ एवं आर्यावर्त बैंक का निरीक्षण किया। उन्होंने मठ के किनारे राखे और वृक्षारोपण करने के निर्देश दिए। लाडब्रेरी के निरीक्षण के दौरान उन्होंने वहां पर उपस्थित छात्रों से पढ़ाई के बारे में जानकारी ली और उन्हें पढ़ाई के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा की गांव में एक लाडब्रेरी और बनवाई जाये स उन्होंने आर्यावर्त बैंक के निरीक्षण में ग्रामीण क्षेत्र से आये हुए लोगों से वाला की तथा बैंक मैनेजर को शाशन की कल्याणकारी योजनाओं से किसानों को लाभान्वित कराने के निर्देश दिए। इस मौके पर प्रभागीय वनाधिकारी नरेन्द्र सिंहएं जिला पंचायती राज अधिकारी चंद्र किशोर वर्मा सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

सीनियर वर्ग में इकरा खान और जूनियर वर्ग में मोहिनी ने प्राप्त किया प्रथम स्थान

महोबा। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर नगर पालिका पालिका परिषद द्वारा स्वच्छ भारत मिशन नगरीय के तत्वाधान में आयोजित छात्राओं की चित्रकला प्रतियोगिता में सीनियर वर्ग में इकरा खान तथा जूनियर वर्ग में मोहिनी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।स्वच्छ भारत मिशन नगरीय के अन्तर्गत नगर पालिका परिषद द्वारा राजकीय बालिका इण्टर कालेज में जूनियर.सीनियर वर्ग की चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कुल 37 प्रतियोगियों ने प्रतिभाग किया। सीनियर वर्ग में प्रथम स्थान इकरा खानएं मोहिनी विश्वकर्मा द्वितीय एवं मोहिनी नामदेव तृतीय स्थान पर रही। जूनियर वर्ग में मोहिनी दयाल ने प्रथमएं वन्दना ने द्वितीय एवं सिमर श्रीवास ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

योगा दिवस की व्यवस्थाएं रखें दुरस्त-रीभा

- बैठक में डीएम ने परखी तैयारियों की प्रगति - स्वास्थ्य की थीम के तहत योगा दिवस कार्यक्रम मनाए जाने के दिए निर्देश बांदा। जिलाधिकारी जे0 रीभा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आगामी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम को सकुशल संपन्न कराए जाने की तैयारी के संबंध में बैठक संपन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी जे0 रीभा ने निर्देश दिए कि आगामी 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का कार्यक्रम एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य की थीम पर आयोजित किया जाएगा। 15 जून से प्रतिदिन कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने सभी कार्यक्रमों को सकुशल संपन्न कराए जाने के लिए समस्त आयुष विभाग के अधिकारियों एवं अधिशासी अधिकारी नगर पालिका/नगर पंचायत, जिला पंचायत राज अधिकारी, जिला विद्यालय निरीक्षक, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी एवं अन्य संबंधित अधिकारियों को निर्दिशित किया। उन्होंने 15 जून को अवस्थी पार्क में प्रातः 6 बजे से योग कार्यक्रम के आयोजन हेतु साफ सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करने एवं प्रशिक्षकों को तैनात करने एवं सभी आवश्यक व्यवस्थाएं करने के निर्देश दिए। 16 जून को सभी स्कूलों महाविद्यालयों में योग से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन कराए जाने तथा 17 जून को न्याय पंचायत में योग दिवस का आयोजन कराए जाने के निर्देश दिए। 18 जून



को अतिथि विशिष्ट व्यक्तियों, दिव्यांगजनों के लिए योग की व्यवस्था किए जाने एवं 19 जून को कार्य स्थल पर योग कराए जाने एवं 21 जून को समस्त तहसील ब्लॉक एवं जनपद मुख्यालय सहित प्रमुख स्थानों में योग के कार्यक्रम आयोजित करने के निर्देश दिए। योग कार्यक्रम के अंतर्गत स्वस्थ रखने हेतु योग की शपथ भी दिलाई जाएगी। जिलाधिकारी ने योग रैली के आयोजन के संबंध में जिला खेलकूद अधिकारी को आवश्यक व्यवस्थाएं करते हुए रैली आयोजित करने के निर्देश दिए। उन्होंने अवस्थी पार्क सहित सभी योग कार्यक्रम स्थलों

पर बेहतर साफ सफाई व्यवस्था सुनिश्चित रखने के निर्देश अधिशासी अधिकारी नगर पालिका को दिए। उन्होंने निर्दिशित किया कि जनपद स्तर के कार्यक्रम में सभी एनसीसी छात्र-छात्राएं, पीआरडी जवान होमगार्ड, मेडिकल कॉलेज की छात्र-छात्राएं व अन्य सभी विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी प्रतिभा करेंगे। बैठक में अपर जिला अधिकारी वित्त एवं राजस्व राजेश कुमार सहित अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी, जिला पंचायत राज अधिकारी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी तथा आयुष विभाग के चिकित्सकगण उपस्थित रहे।

माता-पिता के नाम जरूर लगाएं एक वृक्ष

- वृक्षारोपण करने के साथ कमिश्नर ने मण्डलवासियों को किया प्रेरित

- कर्मचारियों से भी कमिश्नर ने की वृक्ष लगाने की अपील

बांदा। माता-पिता के नाम से एक वृक्ष जरूर लगाएं। वृक्षों की बदौलत आज पर्यावरण संतुलित है। वृक्षों से जहां हमें छाया मिलती है। वहीं वह शुद्ध हवा भी प्रदान करते हैं। उरोक्त उद्गर कमिश्नर ने वृक्षारोपण के दौरान व्यक्त किए। इसके साथ ही उन्होंने मण्डलवासियों के अलावा अपने मातहतों को भी माता-पिता के नाम एक वृक्ष जरूर लगाएं जाने की अपील की है।

आयुक्त चित्रकूटधाम मंडल अजीत कुमार ने गुरुवार को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आयुक्त कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया। उन्होंने सभी सरकारी अधिकारी एवं कर्मचारियों से एक-एक पेड़ अवश्य लगाने तथा उसको सुरक्षित रखना के लिए अपील की। उन्होंने कहा कि वृक्ष पर्यावरण को सुरक्षित एवं संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं, इसलिए हम सभी लोगों को अपने माता-पिता के नाम एक-एक वृक्ष अवश्य रोपित कर उसको जीवित रखने का संकल्प ले। उन्होंने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर अधिक से अधिक वृक्षों को रोपित करते हुए, उन्हें जीवित रखने हेतु सामाजिक संस्थाओं एवं अन्य विभागों के सहयोग से किए जाने के निर्देश दिए। आयुक्त ने कहा कि गांव से नगर तक हर जगह खाली स्थानों पर अधिक से अधिक वृक्षारोपण करें जिससे पर्यावरण संतुलित हो सके। इस अवसर पर प्रभागीय अधिकारी वानिकी अरविंद कुमार एवं अपर आयुक्त भगवानदास ने भी वृक्षारोपण किया। इस अवसर पर आयुक्त कार्यालय के अधिकारी तथा वन विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी गढ़ उपस्थित रहे।



गांजा के साथ पकड़े गए दो अभियुक्त

- चेकिंग के दौरान कोतवाली पुलिस ने किया गिरफ्तार

- छत्तीसगढ़ का रहने वाला है गिरफ्तार एक अभियुक्त

बांदा। कोतवाली पुलिस ने गांजे के साथ दो शातिर अभियुक्तों को पकड़ा है। जिनके कब्जे से बड़े पैमाने पर गांजा बरामद हुआ है। मुकदमा दर्ज करने के बाद पुलिस ने अभियुक्तों को जेल भेज दिया है। एक अभियुक्त छत्तीसगढ़ का रहने वाला है, जो बाहर से गांजा लाकर जनपद में सप्लाई करता था।

पुलिस अधीक्षक पलाश बंसल के निर्देशन में जनपद में अपराध एवं अपराधियों पर नियंत्रण लगाने जाते तथा अवैध मादक पदार्थों के विरुद्ध की जा रही कार्यवाही के क्रम में थाना कोतवाली नगर पुलिस द्वारा गश्त एवं चेकिंग के दौरान मुखबिर की सूचना पर 02 अभियुक्तों को अवैध सुखे गांजे से साथ रखेवे माल गोदाम के पास से गिरफ्तार किया गया। अभियुक्तों के कब्जे से



05 किलो अवैध सूखा गांजा बरामद हुआ है। पृछताछ करने पर गिरफ्तार अभियुक्त ने अपना नाम चन्दू पुत्र कामता सोनी निवासी ग्राम चह्तिहारा थाना कोतवाली देहात तथा अवस्थी पुत्र मुद्रिका प्रसाद अवस्थी निवासी अम्बिकापुर थाना अम्बिकापुर जनपद सरगुजा (छत्तीसगढ़) बताया। पुलिस ने बरामदगी के आधार पर मुकदमा दर्ज करने के बाद अभियुक्त को

जेल भेज दिया है। सीओ सिटी राजीव प्रताप सिंह ने बताया कि अभियुक्त मुद्रिका प्रसाद छत्तीसगढ़ का रहने वाला है। वह बाहर से गांजा लाकर जिले में सप्लाई करता था। जो यह कारोबार वह पिछले काफी समय से कर रहा था। लेकिन मुखबिर की सूचना पर चेकिंग के दौरान उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। उसके साथ में चह्तिहारा गांव निवासी चन्दू भी पकड़ा गया है। चंदू

गंगा दशहरा पर हुए यज्ञोपवीत और विवाह संस्कार

चित्रकूट ब्यूरो- गंगा दशहरा पर्व एवं विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर गुरुवार को गायत्री शक्तिपीठ में विश्व गुरु युगव्रक्षिण पं श्रीराम शर्मा का महाप्रायाण दिवस मनाया गया। जिसमें गायत्री मन्त्र जप, यज्ञोपवीत संस्कार, दीक्षा और विवाह संस्कार भी सम्पन्न कराए गए। कार्यक्रम में गायत्री शक्तिपीठ के संचालक डॉ रामनारायण विपाठी ने उपनयन संस्कार की उपयोगिता समझाया। इसके साथ ही बताया कि गंगा दशहरा गायत्री और गंगा का अवतरण दिवस है। गंगा हमारे स्थूल तन के पाप धोती है जबकि गायत्री मन के, इन दोनों का संयोग ही जीवन का कल्याण कर सकता है। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर उन्होंने पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए

चकबंदी टीम ने प्रक्रियाधीन ग्रामों का भ्रमण कर किया निरीक्षण

चित्रकूट ब्यूरो- उत्तर प्रदेश के चकबंदी आयुक्त भानुचन्द्र गोस्वामी द्वारा गठित चार सदस्यीय टीम ने गुरुवार को उपसंचालक चकबंदी प्रक्रिया के तहत प्रक्रियाधीन ग्रामों का भ्रमण किया। साथ ही कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक आयोजित कर कार्यों की समीक्षा की। इस दौरान चकबंदी कार्यों में लापरवाही बरतने पर दो चकबंदी लेखपालों को निलम्बित करने सहित अन्य अधिकारियों पर कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए। बैठक में उप संचालक चकबन्दी आलोक कुमार ने टीम के सदस्यों को बताया कि जनपद में भूचित्र पुनरीक्षण के अंतर्गत 11 ग्रामों में कार्य किया जा रहा है। बताया कि ग्राम औदह, दरसेड़ा में जन विरोध के कारण अभी तक कार्य शुरू नहीं हुआ है। इस पर बंदोबस्त अधिकारी चकबंदी को निर्देश दिए गए कि इन ग्रामों में बैठक ग्रामवासियों से सहमति बनाकर चकबंदी कार्य प्रारंभ कराए। इसी प्रकार बताया कि धारा आठ पड़ताल के स्तर पर कुल नौ ग्राम हैं, जिनमें से दो ग्रामों में पड़ताल का कार्य चल रहा है तथा शेष ग्रामों के चकबन्दीकर्ता कब्जा परिवर्तन में लगे होने के कारण पड़ताल कार्य प्रारम्भ नहीं हुआ है। बताया कि ग्राम

गढ़वारा में जन विरोध के कारण पड़ताल का कार्य प्रारंभ नहीं हुआ है। इस पर निर्देश दिए गए कि यहां भी बैठकें आयोजित कर किसानों को समझाते हुये कार्य प्रारंभ कराए। बताया कि ग्राम ऐचवारा, मिर्जापुर, डुडौली, महरुच व तेरा बुजुर्ग में चक सीमांकन कराया जा रहा है, जिसका टीम ने मौके पर जाकर स्थलीय कर सत्यापन किया। इस दौरान ने पाया कि चकबन्दी न्यायालयों में विचाराधीन मुकदमों में पांच वर्ष से अधिक अवधि के मुकदमें विचाराधीन नहीं है। इस पर चकबंदी विभाग के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को निर्दिशित किया गया कि चकबन्दी

आयुक्त द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करते हुये निर्धारित समय सीमा के अन्तर्गत कार्य पूर्ण कराए। इस दौरान चकबन्दी कार्यों में लापरवाही बरतने पर चकबंदी लेखपाल अतुल कुमार गुप्ता व आशीष कुमार को निलम्बित करने तथा नागेन्द्र कुमार, चकबंदीकर्ता उमदेश कुमार, ओम प्रकाश शर्मा, कमलेश राम, रमाकान्त गौतम के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिए चकबन्दी अधिकारी को निर्दिशित किया गया। इस मौके पर बन्दोबस्त अधिकारी चकबन्दी मनोहर लाल वर्धन सहित सम्बन्धित अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

खबर एक नज़र

वृक्ष लगाने का लिया संकल्प

बांदा। पर्यावरण दिवस पर शिक्षकों सहित एनसीसी कैडेट्सों ने वृक्ष लगाने के साथ दूसरों को भी प्रेरित करने का संकल्प लिया। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 60 बच्‍डालियन फतेहपुर के कमाण्डिंग ऑफिसर कर्नल ब्रजेश पट्‍ननिया के निर्देशानुसार आदर्श बजरंग इंटर कॉलेज के मैदान में एनसीसी कैडेट्सों द्वारा वृक्षारोपण किया गया। पूर्व चीफ ऑफिसर मंगल प्रसार, लैफ्टिनेंट राम प्रसाद, केयर टेकर कमलेश कुमार की देखरेख में पौधारोपण का कार्य संपन्न हुआ। इस दौरान कैडेट्सों को पौधा लगाने के प्रति संकल्प भी कराया गया। साथ ही मैदान में लगाए गए पौधों को संरक्षण करने के प्रति जागरूक किया गया। केयर टेकर कमलेश कुमार ने हरित हाईड्रोजन को भविष्य की ऊर्जा बताते हुए इसके बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस मौके पर एनसीसी कैडेट्स श्रीराम, गोविन्द, पुष्पेन्द्र, सूरज कुमार, अमन, ऋषभ, अंकित यादव, दीपेन्द्र सिंह सहित 55 कैडेट्सों ने वृक्षारोपण कार्य में भाग लिया।

सफाई कार्य का एडीएम ने लिया जायजा

- जायजा लेने के साथ कार्य में तेजी लाए जाने के दिए निर्देश बांदा। डीएम के निर्देशन पर नाला, नालियों की सफाई का कार्य तेजी से जारी है। गुरुवार को एडीएम ने शहर में चल रहे नाला-नालियों के सफाई के कार्य का जायजा लिया। साथ ही कार्य में तेजी लाए जाने के निर्देश दिए। अपर जिलाधिकारी राजेश कुमार ने निर्माण किये जा रहे हैं। छाबी तालाब तथा शहर क्षेत्र के नालों की सफाई कार्य का निरीक्षण किया। उन्होंने नालों की सफाई कार्य का निरीक्षण करते हुए अधिशासी अधिकारी, नगर पालिका को निर्देश दिए की सभी नालों की सफाई का कार्य बरसात से पूर्व शीघ्र पूर्ण किया जाए। उन्होंने छाबी तालाब के अवशेष कार्य को भी शीघ्र पूर्ण कराया जाने तथा तालाब के किनारे वृक्षारोपण भी कराए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने तालाब के किनारे व्यवस्थित रूप से वृक्षारोपण किए जाने के साथ पौधों को सुरक्षित रखना की व्यवस्था भी कराए जाने के निर्देश नगर पालिका कर्मचारियों को दिए।

फांसी लगाकर युवक ने दी जान

बांदा। सदिध्द हालत में युवक ने फांसी लगा ली, जिससे उसकी मौत हो गई। मौत के बाद मृतक के परिवार में हाहाकार मचा हुआ है। शहर कोतवाली क्षेत्र के झीलपुरवा निवासी 25 वर्षीय वीरेंद्र उर्फ बंदू पुत्र राजेश ने बुधवार की रात करीब 12 बजे कमरे के अंदर पंखा की हुक पर साड़ी से फांसी लगा कर खुदकुशी कर लिया। रात को छोटी बहन संजू की नींद खुली शव देखते ही वह चोख पड़ी। शोर गुल सुनकर परिवार के अन्य लोग मौके पर पहुंच गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में ले लिया। मृतक के चाचा रामशरण ने बताया कि बीरेंद्र दो भाईयों बड़ा था। मजदूरी करता था। फांसी लगाने का कारण अज्ञात है। अचानक हुई इस घटना से मां पुष्पा देवी का रो रो कर बुरा हाल हो गया।

100 विद्यालयों में विकास पथ सेवा संस्थान चलाएगा पर्यावरण के प्रति जागरूकता अभियान- डॉ प्रभाकर

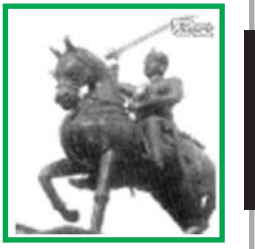
चित्रकूट ब्यूरो- विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर गुरुवार को सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय में विकास पथ सेवा संस्थान द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें पृथ्वी रक्षा यात्रा अभियान की शुरुआत करते हुए पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम में चित्रकूट प्रेस क्लब अध्यक्ष सत्यप्रकाश द्विवेदी ने कहा कि पर्यावरण की रक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व है। सभी को प्राकृतिक धरोहर जल, वायु, भूमि और वन आदि का संरक्षण करना होगा। कहा कि विकास पथ सेवा संस्थान के पृथ्वी रक्षा यात्रा अभियान से जनमानस में जागरूकता आएगी और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता बढ़ेगी। सरदार वल्लभभाई पटेल महाविद्यालय के प्रबंधक अशोक सिंह ने कहा कि युवा समाज की शक्ति है और यदि वह पर्यावरण संरक्षण के लिए आगे आएंगे, तो समाज की दिशा बदल सकती है। भारतीय राष्ट्रीय पत्रकार महासंघ के प्रदेश उपाध्यक्ष राजकुमार याज्ञिक ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण में मीडिया की भूमिका सिर्फ सूचना देना नहीं है, बल्कि समाज को पर्यावरण के प्रति शिक्षित करना भी है। कहा कि पृथ्वी रक्षा यात्रा के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने में मीडिया सेतु का कार्य करेगी। कार्यक्रम संयोजक समाजसेवी डॉ प्रभाकर सिंह ने कहा कि विकास पथ सेवा संस्थान पृथ्वी रक्षा यात्रा अभियान के तहत 100 विद्यालयों और गाँवों में जाकर लोगों को पर्यावरण के संरक्षण के प्रति जागरूक करेगा। इसके साथ ही इन विद्यालयों व पेड़ों में पौधरोपण भी किया जाएगा तथा लोगों को उनकी रक्षा करने के लिए भी प्रेरित किया जाएगा। कहा कि यह अभियान न केवल पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ावा देगी बल्कि भारतीय संस्कृत में निहित “वसुधैव कुटुंबकम” की भावना को भी पुनः जागृत करेगी। इस दौरान महाविद्यालय परिसर में पौध रोपण कर लोगों पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। इस मौके पर महाविद्यालय के शिक्षक डॉ विकास सिंह, लवलेश सिंह, अंकित सिंह सहित विद्यार्थी आदि मौजूद रहे।

पौध रोपण के साथ वन संरक्षण भी है आवश्यक- शशांक पाण्डेय

चित्रकूट ब्यूरो- विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर गुरुवार को जिला कारागार चित्रकूट में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें अधिकारियों सहित कारागार में निरुद्ध बंदियों ने उत्साहपूर्वक वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। जेल अधीक्षक शशांक पांडेय ने बताया कि पौधा रोपण कार्यक्रम में पौध रोपण करने के साथ ही बंदियों को पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जागरूक करते हुए शपथ दिलायी गई। इस दौरान वृक्षों के कटाव, जलवायु परिवर्तन, बाढ़, सूखा, संक्रामक रोग, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण को रोकने के लिए पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए प्रेरित किया गया। इस मौके पर कारागार चिकित्सक शिव कुमार, मनोज राजपूत, उप जेलर नरीश सिंह, प्रमोद कुमार कन्नौजिया, ब्रिजकिशोरी सहित सम्बन्धित अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

ज्येष्ठ दशहरा के दिन जन्म भयो आल्हा कोएं धरती धंसी अढ़ाई हाथ

महोबा। ज्येष्ठ दशहरा को जन्में गुरु गोरखनाथ के शिष्य अमर वीर आल्हा का स्मरण करते हुए आज बुदेलों ने आल्हा चौक में उनकी विशाल प्रतिमा पर माल्यार्पण किया एवं उनकी वीर गाथाओं का अनुश्रवण किया। गुरु गोरखनाथ के कहने पर ही आल्हा ने 1182 में दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान को प्राणदान दिया और संन्यास लेकर राजपाट छोड़ दिया था। बुदेलों ने धीरे-धीरे मिट रही आल्हा की सभी निशानियों व ऐतिहासिक धरोहरों को बचाने के लिए शासन.प्रशासन से मांग की। बुदेली समाज के संयोजक तारा पटकर बुंदेलखंडी ने कहा कि भारी उंझा के चलते महोबा में आल्हा बैठकएं आल्हा की गि़ल्लूएं इंदल बैठक जैसे सभी ऐतिहासिक स्थल अब अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रहे हैं। उनके इतिहास की महोबा में कहीं कोई जानकारी नहीं मिलती। आल्हा उदल से संबंधित संपूर्ण इतिहास की जानकारी आमजन तक पहुंचाने के लिए महोबा में एक आल्हा म्यूजियम बनाने के मांग न जाने कितनी बार उठाई जा चुकी है लेकिन अब तक कुछ नहीं हुआ। उन्होंने बताया कि आल्हा खंड में ज्येष्ठ दशहरा के दिन वीर आल्हा के जन्म का उद्घेख है लेकिन महोबा में कितने लोगों को यह पता है। चंदेल राजा परमाल के सेनापति दसरज व माता देवला की संतान आल्हा का जन्म महोबा शहर से 4 किलोमीटर दूर जिस दिसरापुर गांव में 12वीं शताब्दी में हुआ था। आल्हा उदल की सारी निशानियां अब इस गांव से मिट गई हैं। दिसरापुर गांव को आदर्श गांव घोषित कर विकसित किया जाना चाहिए। बसआल्हा चौक की हालत थोड़ी ठीक है जिसका निर्माण 1984 में तत्कालीन ज्वाइंट मंजिस्ट्रेट सजीव अहलूवालिया ने करवाया था लेकिन कजली डेल में आल्हा उदल का विजय जुलूस दशर से नहीं निकलता। महामंत्री मणु अजय बरसैया ने कहा कि ज्येष्ठ दशहरा को ही गंगा दशहरा कहते हैं। आज ही गंगा नदी का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। हिन्दुओं में आज के दिन का विशेष महत्व है। उन्होंने प्रशासन से महोबा में ऐसा आल्हा म्यूजियम बनाने का आग्रह किया जिसमें उनके जन्म से लेकर सभी 52 लड़ाइयों का सजीव चित्रण हो। इस मौके पर गंगा प्रसाद कोस्टाएं डाणु देवेन्द्र पुरवारएं अवधेश गुप्ताएं दिलीप जैनएं प्रेमएं मेहन्द्र चौंसियाएं मनीष जैदकाएं अच्छे लालएं सुधीर व्यासएं माधव खोएं गोविंद व अमरचंद विश्वकर्मा आदि मौजूद रहे।



गंगा दशहरा पर श्रद्धालुओं ने लगाई आस्था की डुबकी

-सुरक्षा को देखते हुए पुलिस कर रही गश्त कानपुर। गंगा दशहरा पर भारी तदाद में श्रद्धालुओं ने जीवनदायनी मां गंगा में आस्था की डुबकी लगाई। गंगा स्नान के बाद भक्तों ने घाट के किनारे बालू का शिवलिंग बना कर पूजन अर्चन किया और भीषण गर्मी में शरबत वितरण कर पुण्य का लाभ कमाया। वहीं पर्व को देखते हुए शहर के सभी प्रमुख गंगा घाटों के किनारों पर पुलिस ने बेरेकिडिंग की।

ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को गंगा दशहरा मनाया जाता है। धार्मिक मान्यता के मुताबिक इसी दिन राजा भगीरथ की घोर तपस्या पर मां गंगा का धरती पर अवतरण हुआ था। इस दिन गंगा स्तोत्र का पाठ करने से भक्तों की मनोकामना पूर्ण होती है और आत्मिक शुद्धि मिलती है। स्नान, दान और पूजन जीवन को शुद्ध, शांतिपूर्ण



बनाने में मदद करता है। गंगा दशहरा के मौके पर शहर के अटल घाट, परमट घाट, सरसैया घाट, मैसकर, गोला घाट, सिद्धनाथ घाट समेत सभी घाटों में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने गंगा में डुबकी लगाई।

सुबह पांच बजे से ही हर-हर गो, जय शिव शंभु के उदघोषों से घाट गुंजायमान हो उठे। घाटों पर पुरुष, महिलाएं, बुजुर्ग लोगों के साथ बच्चों का सैलाब देखने को मिला। गंगा स्नान के बाद लोगों ने सूर्य को अर्घ्य

देकर मनोकामनाएं मांगी और घाटों के किनारे विधि विधान से पूजा कर दान दिया। इस मौके पर भीड़ नियंत्रित करने के लिए पुलिस बल की तैनाती रही। अटल घाट से सरसैया घाट तक जल पुलिस गश्त करती रही।

सीएम ग्रिड सड़कों का विशेष सचिव ने लिया जायजा

कानपुर। शहर में चल रहे विकास कार्यों का गुरुवार को नगर विकास विभाग के विशेष सचिव महेंद्र बहादुर सिंह ने जायजा लिया। इस दौरान नगर आयुक्त सुधीर कुमार, मुख्य



अभियंता सिविल, जेनल अभियंता दिवाकर भास्कर आदि अधिकारी मौजूद रहे। सीएम ग्रिड परियोजना अंतर्गत निर्माणाधीन सड़क बाबा कुट्टी से अलंकार गेस्ट हाउस होते हुए साउथ एक्स मॉल तक कुल लम्बाई 2.35 किलोमीटर है। विशेष सचिव ने उक्त सड़क का मुआयना किया। मौके पर सड़क पर आरसीसीस्टॉर्म वॉटर ड्रेन/नाला निर्माण का कार्य, यूटिलिटी डवट का कार्य एवं सीवर लाइन डाले जाने का कार्य चला रहा था। विशेष सचिव ने कार्य की प्रगति से संतोष व्यक्त करते हुए निर्देश दिए कि निर्माण कार्यों के दौरान सुरक्षात्मक दृष्टिकोण को प्राथमिकता पर रखा जाए एवं जन सहभागिता को विशेष बल दिया गया। उन्होंने कहा कि व्यावसायिक/ मार्केट एरिया में यथासंभव कार्य को रात्रि के समय कराया जाए, जिससे कि जनमानस को अवागमन में किसी प्रकार की असुविधा ना हो। विशेष सचिव ने निर्देश दिए कि संभव 'स्थलों पर कार्यों को युद्ध स्तर पर कराया जाए, जिससे कार्य की गति में और तीव्रता प्रदान की जा सके। उन्होंने कहा कि कार्य के दौरान निर्धारित मानक, उच्च कोटि की गुणवत्ता, नवीन तकनीकी विधि का समावेश इत्यादि का विशेष ध्यान रखा जाए एवं स्थानीय लोगों को असुविधा का सामना न करना पड़े।

हादसे में युवक की मौत, प्रेमिका पर हत्या का आरोप



कानपुर। बांदा में हादसे के शिकार हुए एक युवक की हैलट अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। परिजनों ने आरोप लगाया कि उसकी प्रेमिका ने घटना को अंजाम दिलवाया है। युवक के कई सालों से युवती से प्रेम संबंध थे, शादी न करने पर युवती ने युवक व उसके परिजनों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई थी। सीसामऊ आरके नगर निवासी अनुग यादव प्राइवेट जॉब करता था। इस साल 7 फरवरी को उसकी शादी बांदा जगपद के रामपुर जसपुरा की रोशनी से हुई थी। अनुग के पूर्व में जरीब चौकी के पास रहने वाली एक युवती से प्रेम संबंध थे। युवती ने अनुग और उसके जीजा व अन्य परिजनों के खिलाफगंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज करवाया था। 4 दिन अनुग अपनी ससुराल गए थे। इस दौरान बाइक सवार ने टक्कर मारी, जिससे अनुग और साला सरनाम भी घायल हो गया था। परिजनों का आरोप है कि युवती अनुग को सोशल मीडिया पर धमका रही थी, धोखा दिया है वह उसके पूरे परिवार को बर्बाद कर देगी। गंभीर रूप से घायल अनुग को बांदा से हैलट रेफर किया गया, जहां गुरुवार सुबह इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

बच्ची को बदनीयती से दबोचने वाला चौकीदार भेजा गया जेल



दर्ज करके चौकीदार को गिरफ्तार कर लिया। एसीपी कल्याणपुर अभिषेक पांडेय ने बताया कि चौकीदार के खिलाफ रेप, पाक्सो एक्ट समेत अन्य गंभीर धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की है। अब उसे कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेजा दिया गया।

कानपुर। कल्याणपुर में एक निर्माणाधीन मकान के आठ साल की बच्ची से बदनीयती से दबोचने के मामले में पुलिस ने चौकीदार जेल भेज दिया। आवास विकास तीन अंबेडकरपुरस में रहने वाला युवक मजदूरी कर परिवार का भरण पोषण करता है। उसकी 8 साल की बेटी कक्षा-4 की छात्रा है। मासूम अपने घर से कुछ दूर स्थित दुकान से सामान लेकर वापस लौट रही थी। इस दौरान रास्ते में एक निर्माणाधीन मकान के बाहर नशे में धुत बैठा बिहार के सीतामढ़ी जिले का रहने वाला चौकीदार राजेश मांझी ने बच्ची को टॉफी-चॉकलेट देकर अंदर बुलाया और उसे दबोच लिया। बच्ची के मुंह में कपड़ा दूंस दिया और दुष्कर्म का प्रयास करने लगे। इस दौरान बच्ची की चीख सुनकर वहां से गुजर रहे लोग निर्माणाधीन मकान के भीतर पहुंचे तो चौकीदार को जमकर पीटा और पुलिस को सूचना दी। इसके बाद बच्ची को भी उसके घर तक सुरक्षित पहुंचाया। बच्ची के पिता की तहरीर पर बुधवार रात को पुलिस ने मामले में रिपोर्ट



कुर्बानी के लिए साढ़े पांच लाख रुपए में बिका पड़वा

बकरीद से पहले सजा जानवरों का बाजार, बना आकर्षण का केंद्र कानपुर। ईद-उल-अजहा के पर्व के चलते बकरा मंडी इन दिनों पूरी तरह सज चुकी है। जाजमऊ क्षेत्र स्थित गल्ला गोदाम एसटीआई परिसर में लगने वाली मंडी में देशी और विदेशी नस्लों के बकरे, भैंसे और पड़वे बड़ी संख्या में बिक्री के लिए लाए गए हैं। बकरीद से पहले यह मंडी खरीदारों और व्यापारियों की चहल-पहल से गुलजार हो उठा है। इस बार मंडी में खास आकर्षण का केंद्र रहा एक शानदार पड़वा, जिस मंदरसा मकदूस दादा मियां के लिए नवीम तारिक की खरीदा। इस पड़वे की कीमत 5 लाख 50 हजार रुपये रही, जो अब तक का सबसे महंगा जानवर रहा। यह जानवर अपनी लंबाई, वजन और सुंदर बनावट के कारण खरीदारों के बीच चर्चा का विषय बना रहा। मंडी में प्रशासन और स्थानीय लोगों के सहयोग से बेहतरीन इंतजाम किए गए हैं।

मंडी में बकरों की कीमत नस्ल, वजन और उम्र के आधार पर तय की जा रही है। सामान्य बकरों की कीमत 12 हजार रुपये से शुरू होकर 20 हजार रुपये तक देखी गई, जबकि भारी भरकम और खास नस्ल के पड़वे 18 हजार से लेकर 30 हजार रुपये तक बिके। सभी आर्थिक वर्गों के लिए यहां विकल्प उपलब्ध हैं। छोटे, मध्यम और बड़े वजन वाले बकरे, जिससे गरीब और अमीर दोनों ही वर्ग के लोग अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार खरीदारी कर सकें। मंडी में सिर्फ कानपुर ही नहीं, बल्कि उज्जैन, फतेहपुर, हरदोई, इटावा और आसपास के जिलों से भी बड़ी संख्या में व्यापारी और ग्राहक पहुंचे हैं। खरीददार लयाकत अली ने बताया कि इस बार सरकार और क्षेत्रीय लोगों ने मिलकर मंडी को सुविधाजनक बनाया है, जिससे भीड़ के बावजूद किसी प्रकार की अपरा-तफरी नहीं देखने को मिल रही है। उन्होंने कहा कि बकरीद से पहले बकरा मंडी में लगी भीड़ और व्यवस्था इस बात की और इशारा करती है कि लोग इस पवित्र पर्व को पूरे उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाने की तैयारी में जुटे हैं।

राज्यमंत्री ने किया कांशीराम व उर्सला अस्पताल का निरीक्षण

-वार्ड में भर्ती मरीजों का जाना हाल

कानपुर। गुरुवार को कांशीराम अस्पताल का अनुसूचित जनजाति आयोग के सदस्य व राज्यमंत्री रमेश चंद्र पुंडे ने निरीक्षण किया। इस दौरान राज्यमंत्री ने सीएमएस से अस्पताल की व्यवस्थाओं के बारे में पूछा। इसके बाद उन्होंने वार्डों में जाकर वहां भर्ती मरीजों से हाल चाल लिया। फिर उन्होंने प्राइवेट वार्ड में चल रहे कामों को भी देखा और संतुष्टि भी जाहिर की। सीएमएस नवीन चंद्र ने बताया कि काशीराम अस्पताल में भर्ती होने वाले मरीजों को जल्द ही प्राइवेट रूम की सुविधाएं मिलने लगेगी। काम बिल्कुल अतिव्यय चरण पर चल रहा है। यहां किराया भी कोई बहुत ज्यादा नहीं रहेगा। लगभग एक कमरे का चार्ज 500 रुपए होगा। इसके अलावा यहां मरीजों के लिए हर



तहर की सुविधाएं रहेगी। कमरे में कुर्सी, टेबल, सोफा, टीवी, एसी और एक किचन भी रहेगा। इसके बाद मंत्री रमेश चंद्र उर्सला अस्पताल पहुंचे। यहां पर उन्होंने आयुष्मान वार्ड में जाकर मरीजों का हाल जाना। मरीजों से पूछा कि किसी भी प्रकार की कोई दवा बाहर से तो नहीं लिखी जा रही है। डॉक्टर समय पर आते

है या नहीं, दवा अंदर से मिलती है कि नहीं। हालांकि सभी तीमारदारों ने संतोषजनक उत्तर दिया। मंत्री ने सीएमएस को निर्देश दिया कि यहां पर आने वाले मरीज के पास अगर पैसा न हो, तो ऐसे मरीजों का खास ख्याल रखें, ताकि उनका भरोसा सरकारी अस्पतालों के प्रति और बढ़े।

खबर एक नजर

प्रदूषण से बच्चों में हो रही एक्टिविटी कम-डॉ यशवंत राय

कानपुर। गुरुवार को जीएसबीएम मेडिकल कॉलेज के बाल रोग विभाग में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 'इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स, की ओर से एक विशेष वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन बच्चों और किशोरों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए पर्यावरण संरक्षण की भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया। वरिष्ठ बाल रोग चिकित्सक डॉ यशवंत राय ने बताया कि प्रदूषण के कई रूप होते हैं। वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदूषण, मानसिक व भावनात्मक प्रभाव इतर्डीर प्रदूषण। इस सभी प्रदूषण का ध्यान में रखना होगा। आज कल के बच्चों की एक्टिविटी काफी कम हो गई है। इस कारण से उनकी शारीरिक क्षमता भी कम हो रही है। इसलिए सुबह की एक्टिविटी आपके बच्चों को बीमारियों से लड़ने की ताकत देती है। डॉ राज तिलक ने बताया कि नाइट्रोजन डाइऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड, पार्टिकुलेट मैटर जैसे हानिकारक कण बच्चों के फेफड़ों के विकास को धीमा करते हैं। इससे अस्थमा, बार-बार खांसी-जुकाम, निमोनिया और क्रॉनिक ब्रॉकाइटिस जैसी बीमारियां हो सकती हैं। अध्ययन बताते हैं कि लंबे समय तक प्रदूषित हवा में सांस लेने वाले बच्चों की फेफड़ों की कार्यक्षमता सामान्य से 20से 30 प्रतिशत तक कम हो सकती है। एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स कानपुर की अध्यक्ष डॉ रेली मोहन श्रीवास्तव ने बताया कि सीसा, आर्सेनिक और प्लास्टिक माइक्रोपार्टिकल्स से दूषित जल के सेवन से बच्चों में विकास रुकना, पेट के रोग, लूचा की एलर्जी और यहां तक कि मानसिक विकास में बाधा जैसे दुष्प्रभाव देखे जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि ध्वनि प्रदूषण भी खतरनाक है। जिसमें की ईयर फोन तो सबसे ज्यादा नुकसान दायक है। तेज आवाजें बच्चों के मानसिक स्तुलन को बिगाड़ती हैं। नींद में बाधा, सिस्टर्ड, पृष्ठ में ध्यान न लगना और लंबे समय में सुनने की क्षमता प्रभावित होना आम शिकायतें हैं।

मशीन के निःशुल्क वितरण हेतु साक्षात्कार

कानपुर नगर। अग्र खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड की टूल किट वितरण योजनातर्गत दोना पत्तल एवं पॉपकॉर्न मशीन के निःशुल्क वितरण हेतु ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किये गये हैं। लाभार्थियों के चयन हेतु 6 जून को पूर्वाह्न 11-00 बजे जिला ग्रामोद्योग कार्यालय, चतुर्थ तल कबीर भवन, डीआई कैम्पस सर्वोदय नगर में साक्षात्कार तिथि निर्धारित की गयी है। अतः सभी दोना पत्तल एवं पॉपकॉर्न मशीन के आवेदन कर्ताओं को निर्देश दिया जाता है कि आवेदन पत्र के साथ सभी आवश्यक दस्तावेज लेकर कार्यालय में साक्षात्कार हेतु उपस्थित हों।

बंगले के नाम पर बिल्डर ने की धोखाधड़ी, मुकदमा दर्ज

कानपुर। बंगले के नाम पर 35 लाख रुपए हड़पने के मामले में भट्टरा मालिक ने बिल्डर अनंत सेठ और उनकी मां के खिलाफ स्वरूप नगर थाने में एफआईआर दर्ज कराई है। रैना मार्केट में मिश्रा भट्टरा के मालिक दीपक मिश्रा ने बताया कि उनकी शॉप पर आने-जाने के दौरान स्वरूप नगर निवासी बिल्डर अनंत सेठ से परिचय हुआ था। इस दौरान अनंत ने बताया कि बसंत कुंज में वह बंगले बना रहे हैं। इस पर दीपक ने अपनी जरूरत को देखते हुए एक बंगला लेने की इच्छा जताई। उन्होंने बताया कि बसंत कुंज की साइट देखने के बाद उन्होंने 20 जुलाई 2013 को 14 नंबर बंगला बुक करा दिया था। चेक के जरिए 5 लाख रुपए उनकी कंपनी द होम्स के नाम पर दिया। इसके बाद कुल 35 लाख रुपए एडवांस दिया, लेकिन बिल्डर ने बंगला नहीं बनाया और को बेच दिया। जानकारी मिलने पर उन्होंने अपने रुपए वापस मांगे तो उन्होंने स्वरूप नगर स्थित अपने घर बुलाया। अपनी मां सविता सेठ के सामने अनंत ने कहा कि हम लोग अब यह घर बेचने वाले हैं। इस पर उनकी मां सविता सेठ ने भी सहमति जताई। बंगले का ड्राइंग देकर कैश 40 लाख रुपए ले लिया। इसके बाद भी कई दिन बीत गए, लेकिन घर नहीं बचा। बाद में पता चला कि घर भी उन्होंने किसी और से बेचने का सौदा कर लिया है। रुपए वापस मांगने पर बिल्डर ने धमकी दी और कहा तुम्हें जो करना हो कर लेना। इसके बाद कई लोगों से दबाव डलवाया और रुपए वापस मांग। बिल्डर ने भी रुपए वापस नहीं किया। इसके बाद उन्होंने स्वरूप नगर थाने में अपनी शिकायत दर्ज कराई। स्वरूप नगर पुलिस ने जांच की तो मामला लौट पाया गया। इसके बाद उन्होंने दीपक मिश्रा की तहरीर पर आरोपी बिल्डर अनंत सेठ और सविता सेठ के खिलाफ धोखाधड़ी, जान से मारने की धमकी देना समेत अन्य गंभीर धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की है।

अभियान चलाकर केस्को ने पकड़ी बिजली चोरी

कानपुर। केस्को के विशेष चेंकिंग अभियान में बड़े पैमाने पर बिजली चोरी का मामला सामने आया है। चीनापाट के 33/11 केवी विद्युत उपकेंद्र क्षेत्र में लाइन लॉस को कम करने के लिए यह विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अधीक्षण अभियंता पीके सिंह के नेतृत्व में चलाए गए चेंकिंग अभियान में 15 घरों में बिजली चोरी पकड़ी गई। सभी मामले रिजवी रोड, अनवरगंज और आसपास के क्षेत्र हैं। चोरी का कुल भार लगभग 35 किलोवाट पाया गया। पकड़े गए सभी मामलों में घरेलू कनेक्शन से बिजली चोरी की जा रही थी। इनमें सबसे अधिक 4-4 किलोवाट की चोरी जमील अहमद और हुस्ना खातून के यहां पाई गई। जबकि कुछ घरों में 1 से 3 किलोवाट तक की चोरी मिली। विभाग ने सभी 15 प्रकरणों में विद्युत अधिनियम की धारा 135 के तहत एफआईआर दर्ज कर दी है।

एयर कैप्सूल प्रो का हुआ अनावरण

कानपुर। भारत के अग्रणी स्पोर्ट्स एवं एथलेजर् ब्राण्ड्स में से एक कैपस एक्टिवियर ने अपने प्रमुख एयर कैप्सूल कलेक्शन के अपग्रेडेड वर्जन। एयर कैप्सूल प्रो का अनावरण किया है। यह नया वेरिएंट आज के युवाओं की बृह्आयामीए तेजी से भाती जीवनशैली को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया गया है, जो अपने बेहतरीन लुक, प्रभावी कुशनिंग के साथ काम से लेकर वर्कआउट, गैदरिंग एवं गेटवेज तक दिन भर आरामदायक अनुभव प्रदान करता है। निखिल अग्रवाल, चीफ़ एक्ज़िक्यूटिव ऑफिसर एवं होल टाइम डायरेक्टर, कैपस एक्टिवियर लिमिटेड ने कहा एयर कैप्सूल प्रो हमारी आधुनिक यात्रा में निर्णायक मोड़ है, जो उपयोग की अनुकूल टेक्नोलॉजी को सक्रिय जीवनशैली में बदल देता है। आज के भारतीय युवाओं की गतिशील एवं बेहद-आयामी जीवन पर आधारित अपग्रेडेड कैप्सूल यूनिट अपने बेहतरे डिज़ाइन के साथ प्रभावी कुशनिंग भी लेकर आती है।

ट्रेनों में लूटपाट करने वाले दो शातिर गिरफ्तार

कानपुर। ट्रेनों में लूटपाट की वारदातों को अंजाम देने वाले गिरोह के दो सदस्यों को जीआरपी ने गिरफ्तार किया है। अभियुक्तों के पास चोरी के मोबाइल बरामद हुए हैं। गिरफ्तार में आए अभियुक्ता जे आर पी कानपुर समेत कई जिलों में आपराधिक मुकदमों दर्ज हैं।



जीआरपी थाना प्रभारी ओमनारायण सिंह ने बताया कि ट्रेनों में लूट व चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाने हेतु पुलिसिंग गश्त बढ़ाई गई है। देर रात जीआरपी टीम को सूचना मिली कि झकरकटी पुल के पास वारदात को अंजाम देने की फिराक में दो शातिर घात लगाए हुए हैं। सूचना के आधार पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची तो शातिर भागने लगे। पुलिस टीम ने घेराबंदी कर दो अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया। पकड़े गए अभियुक्त बेकनगंज के हीरामनपुरवा निवासी मो समीर व बजरिया का मो निजाम हैं। तालाशी के दौरान अभियुक्तों के पास से चार चोरी के मोबाइल बरामद हुए हैं। पूछताछ के दौरान अभियुक्तों ने बताया कि ट्रेनों व प्लेटफार्म पर सो रहे यात्रियों का मोबाइल व अन्य सामान लूट लेते थे और अज्ञान व्यक्तियों को अपनी मजबूरी बताकर बेच देते थे। जीआरपी प्रभारी ने बताया कि पकड़े गए अभियुक्तों पर पूर्व में जीआरपी कानपुर, अनवरगंज समेत फर्रूखाबाद, एटा, लखनऊ व आगरा में आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। इनके गैंग को तलाश की जा रही है।

गाजा संघर्ष विराम प्रस्ताव पर यूएस का फिर वीटो

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में बुधवार को गाजा में तुरंत और स्थायी संघर्ष विराम की मांग करने वाले प्रस्ताव पर अमेरिका ने वीटो कर दिया। अमेरिका का कहना है कि प्रस्ताव में हमاس की तरफ से

बंधकों की रिहाई के मुद्दे पर आपत्ति, 14 देश समर्थन में

बंधक बनाए गए लोगों की रिहाई को संघर्ष विराम से नहीं जोड़ा गया है, इसलिए वह इसे स्वीकार नहीं कर सकता। यह प्रस्ताव 15 सदस्यीय परिषद में लाया गया था, जहां बाकी 14 देशों ने संघर्ष विराम के प्रस्ताव के पक्ष में वोट दिया।

अमेरिका के विरोध का बड़ा कारण है कि अमेरिका चाहता था कि प्रस्ताव में 7 अक्टूबर 2023 को इजरायल पर हमاس के हमले की



निंदा की जाए, हमस के हथियार छोड़ने और गाजा से हटने की भी मांग की जाए। साथ ही

संघर्ष विराम की शर्त यह हो कि सभी बंधकों को बिना शर्त रिहा किया जाए। प्रस्ताव में ये

बातें स्पष्ट रूप से शामिल नहीं थीं। गाजा में मौजूद मानवीय संकट को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने इस प्रस्ताव में इजरायल से सभी सहायता प्रतिबंध हटाने और जरूरी सेवाओं को बहाल करने की मांग की थी। गाजा में करीब 21 लाख लोग पूरी तरह से अंतरराष्ट्रीय मदद पर निर्भर हैं, क्योंकि इजरायली हमलों में लगभग सभी खाद्य उत्पादन व्यवस्था नष्ट हो चुकी है। गौरतलब है कि गाजा में चल रहे संघर्ष के चलते अब तक भयंकर तबाही मच चुकी है। गाजा स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, इस संघर्ष में अब तक 54,000 से ज्यादा फलस्तीनियों की मौत हो चुकी है, जिनमें ज्यादातर महिलाएं और बच्चे हैं। हालांकि यह मंत्रालय हमस सरकार के अधीन है, फिर भी इसके आंकड़ों को संयुक्त राष्ट्र और विशेषज्ञ आमतौर पर विश्वसनीय मानते हैं।

हार्वर्ड में विदेशी छात्रों को नहीं मिलेगा प्रवेश

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय में पढ़ने के इच्छुक लगभग सभी विदेशी छात्रों का देश में प्रवेश रोकने के लिए एक शासकीय आदेश पर

ट्रंप ने किए आदेश पर दस्तखत वीजा पर लगाई रोक

हस्ताक्षर किए हैं। यह 'आइवी लीग स्कूल' से अंतरराष्ट्रीय छात्रों को दूर रखने का उनका नया प्रयास है। 'आइवी लीग' हार्वर्ड विश्वविद्यालय समेत अमेरिका के आठ प्रतिष्ठित निजी विश्वविद्यालयों का समूह है। ट्रंप ने जिस शासकीय आदेश पर हस्ताक्षर किए उसमें घोषणा की गई है कि हार्वर्ड को मैसाचुसेट्स के कैम्ब्रिज स्थित अपने परिसर में विदेशी छात्रों



को दाखिला देने की अनुमति देना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा होगा। ट्रंप ने आदेश में लिखा, 'मैंने यह तय किया है कि उक्त वर्णित विदेशी नागरिकों के वर्ग का प्रवेश अमेरिका के हितों के लिए हानिकारक है क्योंकि मेरे विचार में हार्वर्ड के आचरण ने इसे विदेशी छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए अनुपयुक्त गंतव्य बना दिया है।'

एक नज़र

पाक के साथ सैन्य सहयोग से बचे ऑस्ट्रेलिया नई दिल्ली। भारत ने ऑस्ट्रेलिया को पाकिस्तानी सेना के साथ किसी भी तरह के सैन्य सहयोग या संपर्क से बचने की कड़ी चेतावनी दी है। यह चेतावनी नई दिल्ली में भारतीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और ऑस्ट्रेलियाई रक्षा मंत्री व उप-प्रधानमंत्री रिचर्ड मार्ल्स के बीच हुई महत्वपूर्ण वार्ता के दौरान दी गई। सूत्रों के अनुसार, भारत ने आशंका जताई कि पाकिस्तानी सेना के साथ किसी भी सैन्य सहयोग से ऑस्ट्रेलिया की रक्षा तकनीक चीन के हाथों में पहुंच सकती है, जो क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए खतरा हो सकता है। इस पर मार्ल्स ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया का पाकिस्तान के साथ सैन्य संबंध बेहद सीमित और बहुत छोटा है। एक सवाल के जवाब में मार्ल्स ने कहा, देखिए, पाकिस्तान के साथ हमारे संबंध बहुत मामूली हैं और हम स्पष्ट रूप से, दुनिया भर में हमारे सभी सहयोगों में लोगों से आतंकवाद के खिलाफ काम करने के लिए हर संभव प्रयास करने का आग्रह करते हैं। लेकिन पाकिस्तान के साथ हमारा जुड़ाव बहुत छोटा है। दोनों देशों के बीच वार्ता ऐसे समय में हुई है जब ऑस्ट्रेलिया खुद चीन की बढ़ती सैन्य उपस्थिति को लेकर चिंतित है, खासकर इस साल फरवरी में तस्मान सागर में हुए लाइव-फायर नौसेना अभ्यास के बाद। ऑस्ट्रेलियाई रक्षा मंत्री मार्ल्स वर्तमान में दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया के चार देशों- भारत, मालदीव, श्रीलंका और इंडोनेशिया की यात्रा पर हैं। इस यात्रा का उद्देश्य क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग को मजबूत करना है। दोनों नेताओं ने हाल ही में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की और पीड़ितों के परिजनों के प्रति अपनी गहरी संवेदना प्रकट की। हमले में 25 भारतीय और एक नेपाली नागरिक की मौत हो गई थी। इसकी जिम्मेदारी लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े समूह द रेजिस्टेंस फ्रंट (टीआरएफ) ने ली थी।

पंजाब में सीमापार से हथियार तस्करी में दो गिरफ्तार चंडीगढ़। पंजाब पुलिस ने बृहस्पतिवार को दो व्यक्तियों की गिरफ्तारी के साथ सीमा पार से हथियार तस्करी करने वाले मांड्यूल का पर्दाफाश किया। उनके पास से पिस्तौल समेत छह अत्याधुनिक हथियार भी बरामद किए गए हैं। पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) गौरव यादव ने बताया कि आरोपियों की पहचान तरनतारन निवासी सूरजपाल सिंह और अर्शदीप सिंह के रूप में हुई है। यादव ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा, एक विशिष्ट सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए, तरनतारन पुलिस ने पाकिस्तान से जुड़े एक सीमा पार हथियार तस्करी मांड्यूल का भंडाफोड़ कर गांव लखना से सूरजपाल सिंह और अर्शदीप सिंह को गिरफ्तार किया तथा छह अत्याधुनिक हथियार बरामद किए। डीजीपी ने बताया कि इस संबंध में मामला दर्ज कर लिया गया है तथा आगे की जांच जारी है।

एनआईए ने जम्मू कश्मीर में मांरे छापे श्रीनगर। राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) ने आतंकवादी साजिश को लेकर विभिन्न आतंकवादी संगठनों से जुड़े लोगों के खिलाफ एक मामले की जांच के तहत जम्मू-कश्मीर में अनेक स्थानों पर बृहस्पतिवार को छापेमारी की। अधिकारियों ने बताया कि पुलवामा, कुलगाम, शोपियां, बारामूला और कुपवाड़ा जिलों में छापेमारी की गई। उन्होंने बताया कि आतंकवादी साजिश को लेकर विभिन्न आतंकवादी संगठनों के सहयोगियों के खिलाफ मामले में तलाशी ली जा रही है।

पाक में निजी कंपनी के 11 कर्मचारियों का अपहरण इस्लामाबाद। पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी प्रांत खैबर पख्तूनख्वा से आतंकवादियों ने गुरुवार को एक निजी कंपनी के 11 कर्मचारियों का अपहरण कर लिया। हालांकि, पुलिस ने संदिग्धों का पीछा किया और अपहृत कर्मचारियों में से छह को बचा लिया। अलर्ट मिलने पर जिला पुलिस अधिकारी पुलिस अधीक्षक डेरा इस्माइल खान और आतंकवाद निरोधी विभाग के पुलिस अधीक्षक शकील खान अपनी टीमों के साथ मौके पर पहुंचे और तलाशी शुरू की। शेष पांच बंधकों को बचाने और संदिग्धों को पकड़ने के लिए फिलहाल तलाशी अभियान चल रहा है। एक निजी कंपनी के तीन वहांनों में सवार कर्मचारी इस्लामाबाद से क्रेटा जा रहे थे। तभी खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के डेरा इस्माइल खान जिले में डोमंडा ब्रिज के पास उनका अपहरण कर लिया गया। एक अलग घटना में अफगानिस्तान की सीमा से लगे खैबर जिले के तिराह घाटी के निवासियों ने एक पाकिस्तानी सेना के सैनिक के अपहरण के प्रयास को विफल कर दिया।

पाकिस्तान ने फिर ट्रंप के सामने फैलाए हाथ

इस्लामाबाद। आतंकवाद के मुद्दे पर वैश्विक स्तर पर धिरे और अलग-थलग पड़ चुके पाकिस्तान ने एक बार फिर अमेरिकी राष्ट्रपति

भारत के साथ बातचीत में मदद के लिए गिड़गिड़ाए शहबाज

डोनाल्ड ट्रंप के साथ हाथ फैलाए हैं। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने भारत के साथ बातचीत में मदद करने के लिए अमेरिका को आगे आने के लिए कहा है। इस्लामाबाद में अमेरिकी दूतावास में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शहबाज ने भारत के साथ तनाव कम करने में ट्रंप की भूमिका की तारीफ की और वाशिंगटन से दोनों परमाणु संपन्न पड़ोसियों के बीच



व्यापक वार्ता शुरू करने के लिए प्रयास करने का आग्रह किया। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री का बयान पूर्व विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो जरदारी के उस बयान के समर्थन में आया, जिसमें बिलावल ने भारत-पाकिस्तान के बीच संघर्ष विराम के लिए ट्रंप को श्रेय दिया

गाय था। बिलावल ने दावा किया था कि दोनों देशों के बीच शत्रुता को समाप्त करने में मदद करने के लिए ट्रंप श्रेय के हकदार हैं। भुट्टो ने कहा था, 10 अलग-अलग मौकों पर उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध विराम का श्रेय लिया है। यह सही भी है। वह इस श्रेय के हकदार हैं, क्योंकि उनके प्रयासों से ही युद्ध विराम संभव हो पाया। इसलिए अगर अमेरिका इस युद्ध विराम को बनाए रखने में पाकिस्तान की मदद करने को तैयार है, तो यह उम्मीद करना उचित है कि व्यापक वार्ता शुरू करने में अमेरिकी भूमिका हमारे लिए भी फायदेमंद होगी।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बाइडन की होगी जांच

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने क्षमादान देने और अन्य दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने के लिए पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडन द्वारा 'ऑटोपेन' का इस्तेमाल किए जाने की **पूर्व प्रशासन के अधिकारियों से होगी पूछताछ**

जांच करने का बुधवार को आदेश दिया। इसके अलावा अमेरिकी संसद के निचले सदन-प्रतिनिधि सभा में रिपब्लिकन पार्टी के नेताओं ने भी बाइडन के करीबी सदस्यों से पूछताछ का अनुरोध किया है। 'ऑटोपेन' एक यांत्रिक उपकरण है जिसका उपयोग किसी व्यक्ति के प्रामाणिक हस्ताक्षर की नकल करने के लिए किया जाता है

और अमेरिका के राष्ट्रपति दशकों से इसका इस्तेमाल कर रहे हैं, लेकिन ट्रंप ने आरोप लगाया है कि बाइडन की कुछ कार्रवाइयों अमान्य थीं एवं उनके सहयोगियों ने राष्ट्रपति के अधिकार का दुरुपयोग किया ताकि बाइडन की 'सोचने- समझने की शक्ति कमजोर' होने की बात को छिपाया जा सके। ट्रंप ने एक जापान में लिखा, 'यह साजिश अमेरिकी इतिहास के सबसे खतरनाक और चिंताजनक घोटालों में से एक है।' उन्होंने कहा, 'अमेरिकी जनता से जानबूझकर यह छिपाया गया कि कार्यकारी शक्ति किसके पास है और बाइडन के हस्ताक्षर का इस्तेमाल हजारों दस्तावेजों पर किया गया ताकि बड़े नीतिगत बदलाव किए जा सकें।'

डोनाल्ड ट्रंप और पुतिन के बीच हुई बातचीत

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया है कि रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने उन्हें साफ शब्दों में कहा है कि रूस, यूक्रेन

रूस यूक्रेनी हमले का देगा जवाब

के हालिया ड्रोन हमले का जवाब जरूर देगा। यह बातचीत बुधवार को फोन पर हुई, जो करीब 1 घंटे 15 मिनट तक चली। ट्रंप ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्विटर सोशल पर पोस्ट करके इस बातचीत की जानकारी दी। हालांकि बाद में ट्रंप ने ट्विटर सोशल पर से इस पोस्ट को डिलीट कर दिया है। ट्रंप के मुताबिक, पुतिन ने यूक्रेन की तरफ से रूसी एयरफोल्स (हवाई अड्डों) पर किए गए ड्रोन हमले का



जिक्र किया और कहा कि इस हमले को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। पुतिन ने यह बात बहुत दुष्टता से कही कि रूस इस पर कार्रवाई करेगा। ट्रंप ने लिखा, हमने यूक्रेन की तरफ से रूस के डॉक्स में खड़े विमानों पर किए गए हमले और दोनों पक्षों द्वारा चल रहे अन्य हमलों पर

चर्चा की। यह एक अच्छा संवाद था, लेकिन इससे तात्कालिक शांति की उम्मीद नहीं की जा सकती। हालांकि डोनाल्ड ट्रंप ने यह भी स्वीकार किया कि यह बातचीत शांति की ओर कोई ठोस कदम नहीं है, लेकिन दोनों देशों के बीच संपर्क बनाए रखना जरूरी है। यह बातचीत 19 मई के बाद ट्रंप

तुर्की एयरलाइंस के विमान में मिले विस्फोटक

नई दिल्ली। भारत ने तुर्की की सरकारी एयरलाइन टर्किश एयरलाइंस को सुरक्षा नियमों का उल्लंघन करने पर कड़ी चेतावनी दी है। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) द्वारा दिल्ली, हैदराबाद, चेन्नई और बेंगलूर हवाई अड्डों पर 29 मई से 2 जून **डीजीसीए ने दी सख्त चेतावनी** के बीच की निरीक्षण में कई गंभीर खामियां उजागर हुईं, जिनमें एक उड़ान में विस्फोटक सामग्री भी मिली, जिसकी न तो अनुमति ली गई थी और न ही इसका खुलासा किया गया था।

एक कार्गो उड़ान में खतरनाक वस्तुएं पाई गईं, जिनमें विस्फोटक पदार्थ शामिल थे। इन विस्फोटकों को भारत के ऊपर से ले जाने या भारत में लाने के लिए डीजीसीए की विशेष अनुमति आवश्यक होती है, लेकिन न तो ऐसी अनुमति ली गई थी और न ही इसका खुलासा किया गया था। निरीक्षण के दौरान यह पाया गया कि ग्राउंड ऑपरेशन को हैंडल कर रहे कर्मचारियों के पास न तो प्राधिकृत प्रमाण पत्र था



और न ही वैध दक्षता कांड। साथ ही, विमान की लैंडिंग पर कोई मान्यता प्राप्त रखरखाव इंजीनियर मौजूद नहीं था और उसकी जगह एक तकनीशियन ने पूरी प्रक्रिया अंजाम दी। डीजीसीए ने पाया कि टर्किश एयरलाइंस और उसके ग्राउंड हैंडलिंग एजेंट के बीच कोई सेवा स्तर समझौता मौजूद नहीं था। इसके अलावा ग्राउंड इन्फ्रामेंट की ठोस निगरानी और जवाबदेही की व्यवस्था भी नहीं पाई गई। नागर विमानन मंत्रालय ने स्पष्ट कहा है कि तुर्की एयरलाइंस की भारत में सभी उड़ानें अब डीजीसीए की सख्त

निगरानी में रहेंगी और आवश्यकता पड़ने पर फॉलो-अप निरीक्षण भी किए जाएंगे ताकि सतत सुरक्षा निगरानी सुनिश्चित की जा सके। वरिष्ठ अधिकारियों ने बताया कि ये निरीक्षण सीधे उन विमानों पर किए गए जो टर्किश एयरलाइंस भारत में संचालित कर रही है। डीजीसीए की चेतावनी से टर्किश एयरलाइंस पर नियमों का सख्ती से पालन करने का दबाव बनेगा। भविष्य में ऐसी कोई चूक पाई गई, तो फ्लाइट परमिट रद्द होने तक की कार्रवाई हो सकती है।

इमोशनल सीन में सचमुच रो पड़ीं सिमरन कौर!

पॉपुलर ड्रामा 'जमाई नं. 1' लगातार दर्शकों को अपनी हाई-वोल्टेज कहानी और इमोशनल पलों से जोड़कर रख रहा है। हाल के एपिसोड में कहानी एक चौंकाने वाला मोड़ लेती है जब नील (अभिषेक मलिक) पर सायली (सोनल वेङ्गुल्लकर) की ओर से छेड़छाड़ का बूटा आरोप लगाया जाता है और पुलिस उन्हें गिरफ्तार कर लेती है। इस उथल-पुथल के बीच, सिमरन कौर ने नील की समर्पित पत्नी रिद्धि के रूप में एक बेहद इमोशनल और दमदार परफॉर्मेंस दी, जिसने दर्शकों को भीतर तक झकझोर दिया। इस सीन को खास बनाने वाली बात ये थी कि सिमरन ने इसे एक ही टेक में शूट किया, वो भी इतनी गहरी भावनात्मक तीव्रता के साथ कि दृश्य स्क्रीन पर पूरी तरह जीवंत हो उठा। शूट से पहले उन्होंने खुद को अपने कमरे में बंद कर लिया, चुपचाप स्क्रिप्ट पढ़ी और खुद को किरदार की मानसिक स्थिति में

ढाल लिया। उनकी यह मेथड एक्टिंग नज़र आई उस सीन में, जो टीवी पर बहुत कम देखने को मिलता है। सिमरन कौर कहती हैं, "जब मैंने स्क्रिप्ट पढ़ी, मुझे समझ आ गया कि ये सीन बेहद चैलेंजिंग होने वाला है, लेकिन उतना ही खास भी। मैं इसे सिर्फ एक्टिंग की तरह नहीं करना चाहती थी - मैं चाहती वो हर भावना महसूस करना चाहती थी जो रिद्धि उस पल में महसूस कर रही थी। मैंने खुद को कमरे में बंद किया, शांत बैठे रही, और खुद से पूछा - 'अगर आपके किसी अपने पर ऐसा आरोप लगे, और आप कुछ कर भी न सकें, तो क्या महसूस होगा?' वो बेबसी, वो तड़प, वो गुस्सा... सब एक साथ उमड़ पड़ा। और फिर जब कैमरा शुरू हुआ, मैंने खुद को पूरी तरह सीन के हवाले कर दिया। वो एक ही टेक था, लेकिन उसमें मैं पूरी तरह बह गई थी। सेट पर पूरा माहौल शांत हो गया था।" गौरतलब है कि 'जमाई नं. 1', रोज रात 11 बजे जो टीवी पर प्रसारित है।

बकरीद: खुशी, रिश्तों और यादों का जश्न

ईद-अल-अदहा यानि बकरीद ऐसा पर्व है जो कुर्बानी, शुक्रगुजारी और ईमानियत की भावना को एकजुट करता है। यह सिर्फ रस्मों और दावतों तक सीमित नहीं होता, बल्कि बचपन से लेकर आज तक के यादगार लम्हों की भी सौगात लेकर आता है। एण्ट्रीवी के कलाकारों ने इसी जज्बे को बयां करते हुए अपने कुछ बेहद खास और भावनात्मक अनुभव साझा किए हैं। 'भाबीजी घर पर हैं' में मनमोहन तिवारी का किरदार निभा रहे रोहितराध गौड़ और 'हप्पू की उलटन पलटन' में मलाइका सिंह की भूमिका में नजर आने वाली सोनल पंवार ने बताया कि कैसे बचपन में दोस्तों और पड़ोसियों के साथ मिलकर उन्होंने ईद-अल-अहा मनाई-जहां सिर्फ स्टाइलड्रेड खाने की खुशबू नहीं, बल्कि रिश्तों की गर्माहट और अपनपन भी था। इन यादों की मिठास आज भी उनके त्योहार को खास बनाती है और यह एहसास



दिलाती है कि त्योहार मनाने का असली मतलब दिलों को जोड़ना है। 'हप्पू की उलटन पलटन' में मलाइका सिंह का किरदार निभा रहीं सोनल पंवार ने बकरीद की अपनी य्यारी यादें साझा करते हुए कहा, "यह त्योहार दया, प्यार, स्वाद और मस्कुराहटों बाँटने का अवसर है। मेरी तरफसे सभी को ईद मुबारक!" 'भाबीजी घर पर हैं' में मनमोहन तिवारी का किरदार निभा रहे रोहितराध गौड़ ने कहा " मैं 'भाबीजी घर पर हैं' के सेट पर ईद का बेसब्री से इंतज़ार करता हूँ।

बाजार दर्पण

मिशिका

सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल

Cares For Your Health & Wealth...

आपका विश्वास हमारा प्रयास

वि-केंटर इंडिया हेल्थ कार्ड

बनवाएं और लाभ उठाएं

एक छत के नीचे सारी सुविधाएँ उपलब्ध है।

24x7 EMERGENCY

आपातकालीन सेवा में आपका भरोसा हमें साथी

अधिक जानकारी के लिए हॉस्पिटल रिसीप्शन पर सम्पर्क करें **9792934124, 7275534124**

पता: 301 डी, निगर सेंटर जोसेफ स्कूल, जे.के. चौराहा, लखनऊ रोड कानपुर

SHRI GANGA ORTHOCARE CENTRE

श्री गंगा ओर्थोकेयर-सिस्टम सेंटर

Dr. D.K. Dubey
M.S. (Ortho)
Senior consultant, Orthopaedic Surgeon

Dr. Anurag Diwedi
M.B.B.S., D.Ortho(Mumbai)
Orthopaedic Surgeon

अजित अशुभिक मॉड्यूलर OA और टोपी रिस्किन सी-अर्थ-स्कोपिंग द्वारा ट्यूटी हड्डी को जोड़ने एवं अशुभिक तरीकों से ऑपरेशन किये जाते हैं। अचूक एवं क्यूरे के जोड़ अकारणिक की सुविधा उपलब्ध है अकसर दर्द व जलन के बाद जबकि जोड़ों की घास खोलने के लिए आधुनिक मशीनों द्वारा फिजियोथेरेपी एवं फिजिओलॉजी की सुविधा उपलब्ध है इटाली में जोड़ रीप्लेसिंग सही और बेहतर उपचार के लिए आज ही परामर्श लें

Shri Ganga Orthocare Centre

CONTACT: 9068067700, 9411942021
Address: Old Agra Road Etawah

विश्वास नेत्र एवं लेज़र सेंटर

डॉ. विश्वास वर्मा नेत्र सर्जन

मेडिकलेम सुविधा उपलब्ध

विराम खण्ड, राम भवन के सामने गोमती नगर लखनऊ मोबाइल: 9415016089

उत्सव लॉन्स गोरखपुर में

शादी-विवाह एवं अन्य शुभ आयोजनो हेतु।

ब्रह्मदाहपुर, गोरखपुर

फोन:- 0551-2338099

+918400085593